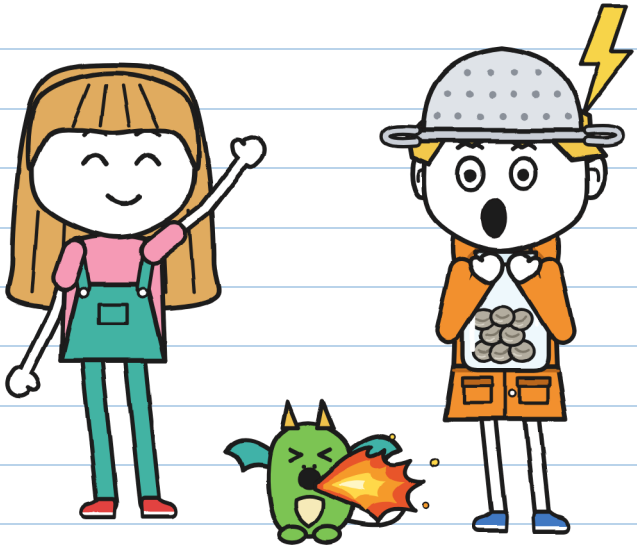
नामुमकिन डिलीवरी · 2

बादल गरजने से पहले न खोलें

Lui Eriksson



(गुनी की डायरी)

साइज़ L
उन्नत स्तर · 11+

नामुमकिन डिलीवरी · 2
बादल गरजने से पहले न खोलें

लेखन और चित्र: Lui Eriksson

साइज़ L · उन्नत स्तर · 11+

हिन्दी संस्करण: LinguAula

पहला संस्करण: 2026

© 2026 Lui Eriksson · info@linguaula.com

कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

सीरीज़ की दूसरी किताब। पहली: "यह पार्सल काटता है"।

LinguAula

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com पर करो

इस किताब को लिखने के दौरान किसी भी गरज को चोट नहीं पहुँची। –ज.



और किसी और की नहीं। –ज.

अगर यह तुम्हें मिल जाए, तो बादल गरजने से पहले मत खोलना।

सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर उसे चिह्नित करती है जो सिर्फ़ कहानी में होता है: तुम इसे मत करना। अगर वह कई पन्नों तक चले, तो "यहाँ से" और "यहाँ तक" लिखा होता है। असली तूफ़ान हो, तो पेज 76 देखो। –ज.

कौन कौन है



गुनी। शनिवार का डिलीवरी बॉय। तूफ़ान का शिकारी (कुछ-कुछ)। यह डायरी उसी की है।



जूलिता। बिजली चमकने और बादल गरजने के बीच के सेकंड गिनती है। हरे रंग से लिखती है और "ज." से दस्तख़त करती है।



चूरा। ड्रैगन की बच्ची। गुनी की हर बात की नक़ल उतारती है। हर बात की।



टोन्यो। साइकिल पर "बिजली" के लिए डिलीवरी करता है। दस मिनट में या मुफ़्त।



फ़्लोरा। नहर वाली सड़क, १ की बाग़बान। पत्थरों के लिए दस्तख़त नहीं करतीं।



वेरा। ड्रैगनों के घर में ड्रैगनों की देखभाल करती है, जो फ़्लोरा के घर के बग़ल में है। चूरा उन्हीं के साथ रहती है।



मारा। नामुमकिन डिलीवरी की मालकिन। जादूगरनी वाली टोपी पहनती है। जितना बताती है, उससे ज़्यादा जानती है।



R. की तरफ़ से वे पार्सल भेजे जाते हैं जिन्हें कोई नहीं पहुँचा पाता। कोई उसका नाम नहीं लेता।

डिलीवरी डायरी 2
गुनी की

ऑफ़िशियल।

"ऑफ़िशियल" का मतलब है कि इसे पहले मैं पढ़ूँगी। ऑफ़िशियली। –ज.



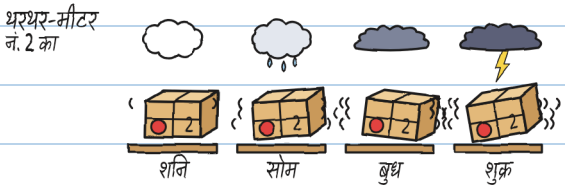
डायरी नंबर 1 मेरी ख़त्म हो गई; वह पूरी भर चुकी है। यह नई डायरी मुझे मारा ने दी, जो दुकान की मालकिन हैं, और इसके कवर पर दुकान की मुहर लगी है। उनका कहना है कि ऑफ़िशियल डायरियों में चित्र नहीं बनाए जाते। देखते हैं।

अध्याय 1

तूफ़ान का शिकारी

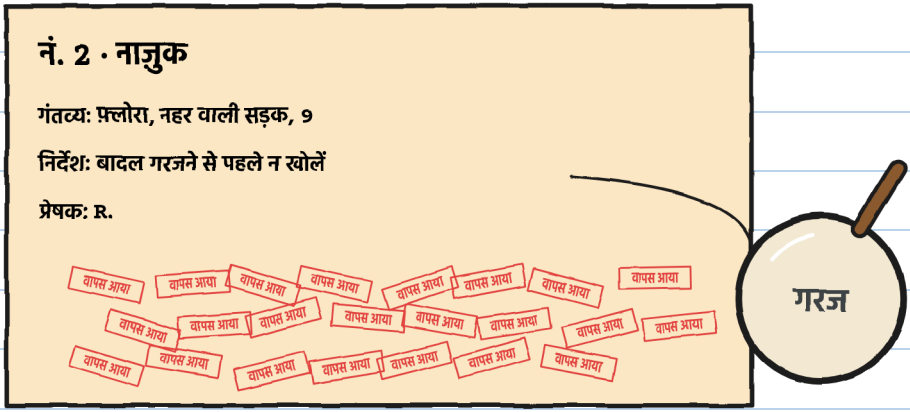
मारा की दुकान में एक पार्सल काँप रहा है। पिछले शनिवार से यह ऐसे ही काँप रहा है, हर दिन थोड़ा और ज़्यादा।
मैंने तय किया है कि मैं इसे हाथ नहीं लगाऊँगा।
जो आख़िरी पार्सल जूलिता और मैंने पहुँचाया था, वह एक अंडा था; अब वह ड्रैगन की बच्ची है, जिसका नाम चूरा है और जो मेरी हर बात की नक़ल उतारती है।

मेरे घर के सामने वाली दुकान में उन्नीस वापस आए पार्सल बाक़ी हैं। और उनमें से एक ऐसा लगता है जैसे इंतज़ार करते-करते थक गया हो।



यह डर से नहीं काँप रहा: तूफ़ान आने वाला है, शनिवार को, शाम छह बजे। मौसम की ख़बर में छह बार देखा है। —ज.

वापस आए पार्सल वे पार्सल हैं जो हमेशा लौट आते हैं: अगर पाने वाला लेबल पर कभी न मिटने वाली स्याही से (जैसी जूलिता के हरे मार्कर की है) दस्तख़त न करे, तो सुबह होते ही वे उड़कर अपने शेल्फ़ पर लौट आते हैं। इन सबको एक ही व्यक्ति ने भेजा है: R.



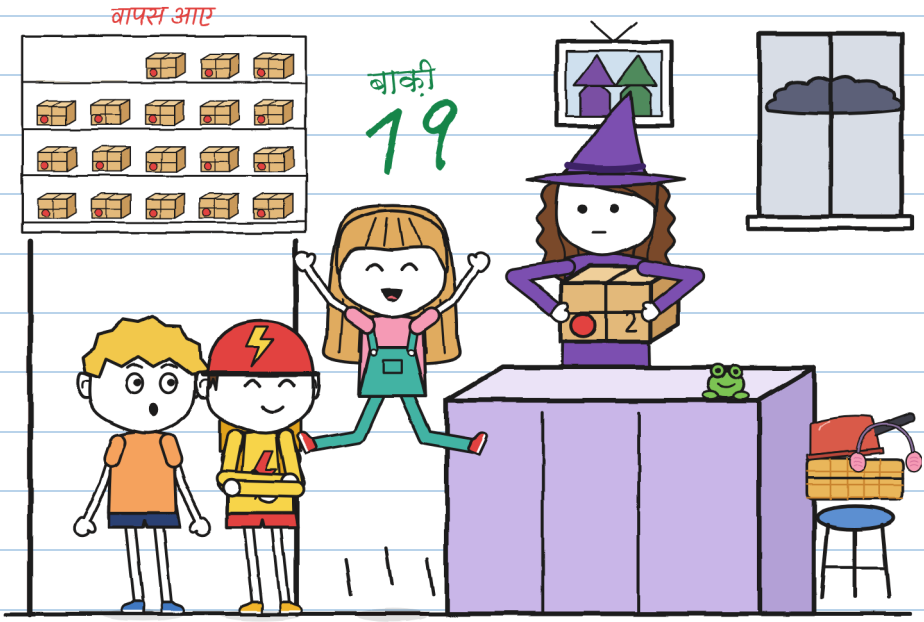
नं. 2 पर तेईस "वापस आया" की मुहरें लगी थीं।

तेईस। मैंने दो बार गिना है। —ज.

"तेईस बार मैं इसे ख़ुद लेकर गई हूँ," मारा ने कहा। "और एक बार भी तूफ़ान में नहीं।"

शनिवार को, दस बजे, मारा काउंटर पर नं. 2 हाथ में लिए हमारा इंतज़ार कर रही थीं। टोन्यो वहाँ पहले से था: हर शनिवार हम तीनों की दुकान में सज़ा होती है, क्योंकि हमने नं. 1 बिना इजाज़त के पहुँचा दिया था।

"यह वाला," मारा ने कहा, "तुम लोग पहुँचाओगे। आज शाम को।"

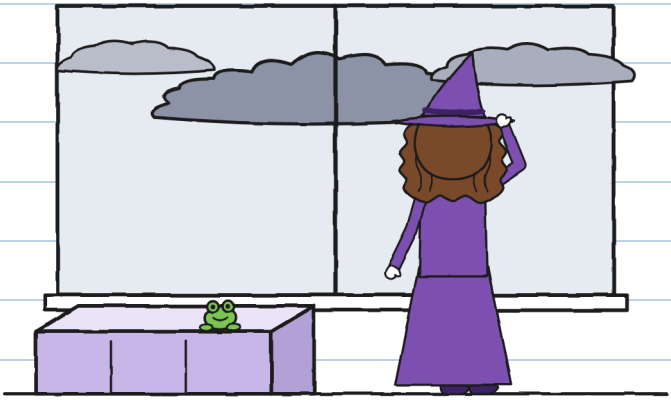


जूलिता इतनी ऊँची उछली कि "बाक़ी 19" वाले बोर्ड को लगभग छू ही लिया।

मारा ने तीन शर्तें रखीं, और उन्हें उँगलियों पर गिनाया:

1. *तुम लोग पाँच बजे निकलोगे, तूफ़ान आने से पहले, और जब तक वह गुज़र न जाए, फ़्लोरा के घर पर रहोगे।*
2. *तुम्हारे घर वालों को पता है, और फ़्लोरा को भी।*
3. *नियम वही है जो लेबल पर लिखा है: बादल गरजने से पहले नहीं खोलना। और गरज ठीक सिर के ऊपर वाली होनी चाहिए: दूर वाली गरज नहीं चलेगी।*

"और आप नहीं आ रहीं?" जूलिता ने पूछा।
"मुझे यहाँ कुछ काम हैं," मारा ने कहा, और दुकान की खिड़की से बाहर देखा, जहाँ आसमान धीरे-धीरे स्लेटी हो रहा था।

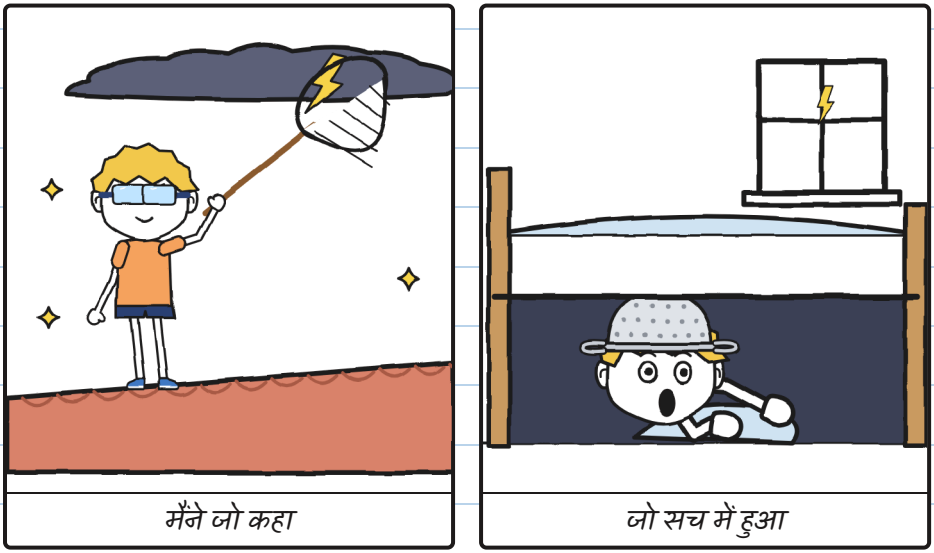


कौन-से काम? –ज.

तभी जूलिता ने मेरी तरफ़ देखा।
"तुम्हें तूफ़ान पसंद हैं?"

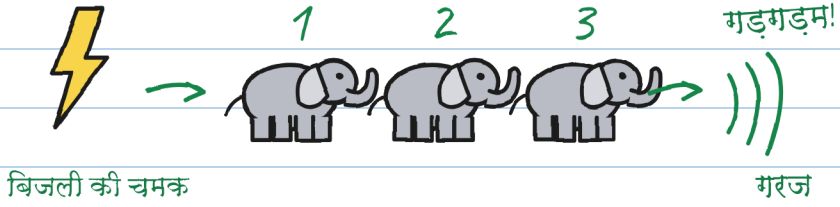
और मैंने वही कहा जो सब कहते हैं जब कोई उन्हें ऐसे देखता है:

"बहुत पसंद हैं। अपने पुराने मोहल्ले में मैं प्रोफेशनल तूफ़ान का शिकारी था।"



पलंग के नीचे का प्रोफेशनल। –ज.

जूलिता ने मुझे तूफ़ान गिनना सिखाया। मेरी डायरी में, बिना पूछे, हमेशा की तरह:



एक हाथी, दो हाथी, तीन हाथी...

1 हाथी = 1 सेकंड

3 हाथी = 1 किलोमीटर (लगभग)

0 हाथी = ठीक ऊपर!

↖ यह लेबल वाली गरज है।
दूर वाली गरज पार्सल नहीं खोलती।

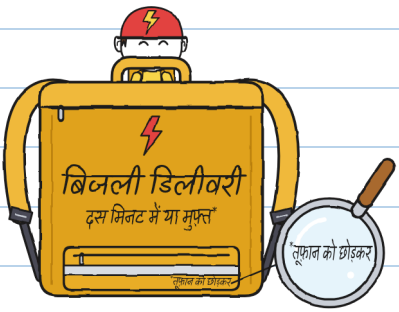
ज़्यादा हाथी: वह बिजली और दूर गिरी।

अगर तुम्हें गरज सुनाई दे, चाहे दूर ही क्यों न हो: अंदर चलो!

जो पता हो, उससे कम डर लगता है। –ज.

मुझे कुछ गिनने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि मुझे तो तूफ़ान बहुत पसंद हैं। फिर भी मैंने लिख लिया, कहीं काम आ जाए।

टोन्यो ने मेरे कंधे के ऊपर से लेबल पढ़ा और हमें अपने बैग पर छपे छोटे अक्षर दिखाए।
"'बिजली' तूफ़ान में डिलीवरी नहीं करती।"
"अभी तूफ़ान नहीं है," जूलिता ने ध्यान दिलाया।
टोन्यो ने छोटे अक्षर दोबारा पढ़े। "अभी" के बारे में उनमें कुछ नहीं लिखा था। और वह हमारे साथ चल पड़ा।

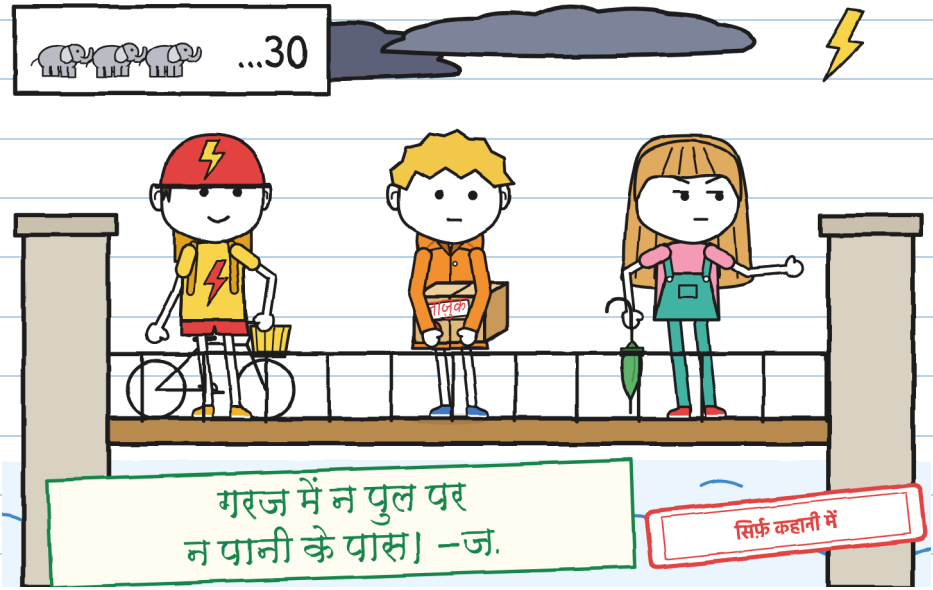


छोटे अक्षर, बड़ा बहाना। –ज.

पाँच बजे मैं रेनकोट लेने सड़क पार करके अपने घर गया।
"नारंगी वाला पहन लो," मम्मी ने दरवाज़े से कहा। "पक्का जाना है? तुम तो जब बादल गरजते हैं..."
"बाय, मम्मी!"

"तुम तो जब बादल गरजते हैं..." क्या? –ज.

हमने बड़ा पुल पार किया, जिसे रात को जहाज़ों के लिए उठा देते हैं, जबकि आसमान और काला होता जा रहा था। बीच में पहुँचकर जूलिता ने बहुत गंभीर चेहरा बनाकर पानी की ओर हाथ हिलाया: नहर और उसकी बनती नहीं।



बहुत दूर आसमान चमक उठा। गरज सुनाई देने से पहले जूलिता ने तीस हाथी गिन लिए।

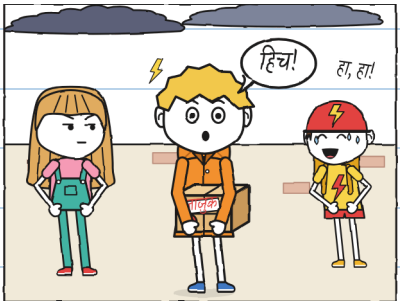
गड़गड़म।

"वह बिजली करीब दस किलोमीटर दूर गिरी," उसने कहा। "मौसम की ख़बर में तूफ़ान छह बजे के लिए बताया है।"

"बादल गरजा!" टोन्यो बोला। "अब खोल सकते हैं?"

"यह वाली गरज पार्सल नहीं खोलती," जूलिता ने कहा: "लेबल वाली गरज वह है जो बिजली की चमक के साथ ही आए, शून्य हाथी। पर यह अब सुनाई दे रही है, और वही काफ़ी है: अंदर चलो!" हम नहर वाली सड़क तक भागे। मैंने ऐसा दिखाया जैसे मैंने कोई गरज सुनी ही नहीं।

"क्या यह हिच थी?" जूलिता ने पूछा।
"नहीं," मैंने कहा। "हिच!"



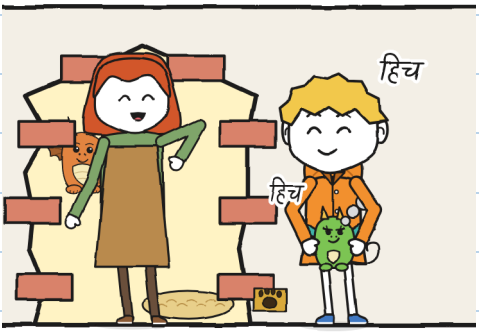
यह मुझे बचपन से होता है, पर सिर्फ़ गरज पर: हर गरज के साथ मुझे हिचकियों की झड़ी लग जाती है, हर तीन सेकंड में एक, और तूफ़ान सिर पर हो तो रुकती ही नहीं। यह डर नहीं है। यह मेरा शरीर मुझसे पूछे बिना करता है।

इसे डर कहते हैं। –ज.

वेरा ड्रैगनों के घर के दरवाज़े पर, जो फ़्लोरा के दरवाज़े से सटा है, हमारा इंतज़ार कर रही थीं, गोद में चूरा को लिए: शनिवार को चूरा मेरे साथ घूमने जाती है।

"सिर्फ़ फ़्लोरा के घर तक: यह उसका पहला तूफ़ान है," वेरा ने कहा और उसे मेरी बाँहों में दे दिया। "यह तुम्हारी हर बात की नक़ल उतारती है, गुनी। जो तुम महसूस करते हो, उसकी भी। अगर यह डर जाए, तो इसे खींचना मत: यह पकड़ लेती है। तूफ़ान गुज़र जाए, तो आँगन की दीवार पर तीन बार थपथपाना, मैं इसे लेने आ जाऊँगी।"

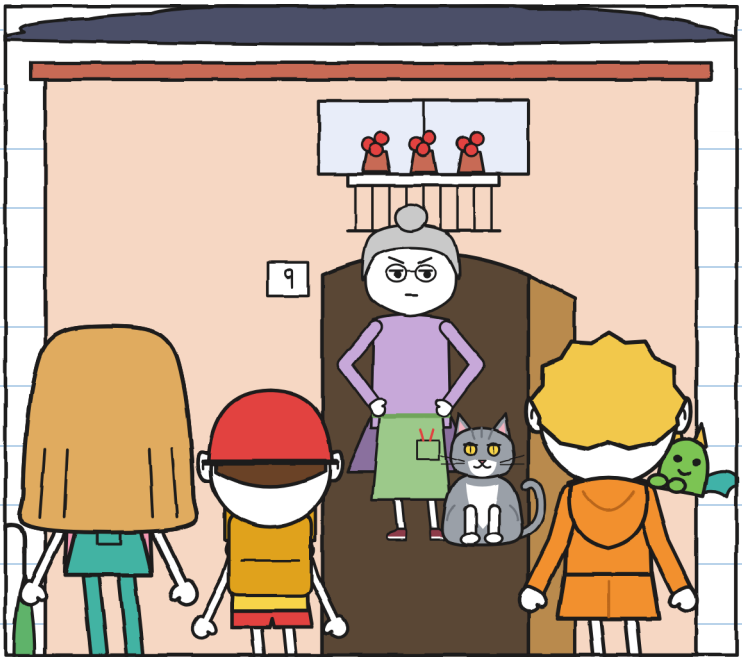
"मुझे कुछ महसूस नहीं होता," मैंने कहा। "मुझे तो तूफ़ान बहुत पसंद है।"



दूर कहीं बादल गरजा। मैंने हिच किया। चूरा ने हिच किया, और उसकी नाक से धुआँ निकला।

"अंदर चलो, अभी!" वेरा ने कहा।

फ़्लोरा का घर वही है जिसकी बालकनी में गमलों के फूल खिले हैं। दो शनिवार पहले उसी बालकनी से एक आंटी हमें देख रही थीं, जब हम ड्रैगनों के घर का दरवाज़ा ढूँढ रहे थे। वह दरवाज़ा दीवार जैसा दिखता है।



फ़्लोरा ने हमारे दस्तक देने से पहले ही दरवाज़ा खोल दिया। उन्होंने डिब्बे को देखा। आसमान को देखा। चूरा को देखा। "यह वेरा की बच्ची है। देखना, मेरे फ़र्न न झुलसा दे," उन्होंने कहा। "आ जाओ अंदर, पानी आने वाला है। पर बता दूँ: मैं पत्थरों पर दस्तख़त नहीं करती।"

अध्याय 2

गरज!

फ़्लोरा की रसोई पौधों से भरी है: मेज़ पर, फ़र्श पर, छत से लटकते हुए। पीछे एक काँच का दरवाज़ा ग्रीनहाउस में खुलता है, और बिल्ली वाले छोटे दरवाज़े वाला पिछला दरवाज़ा आँगन में। टोन्यो ने बारिश की वजह से साइकिल गलियारे में रख दी।

ग्रीनहाउस के काँच पर कुछ पेंट की हुई बूँदें थीं। एक ऊपर चढ़कर चौखट तक पहुँच गई। अगली ने उसे पीछे छोड़ दिया।

"ये R. के जादुई शीशे हैं," फ़्लोरा ने कहा। "बारिश को तब अंदर आने देते हैं जब मैं चाहूँ। बिजली को कभी नहीं।"

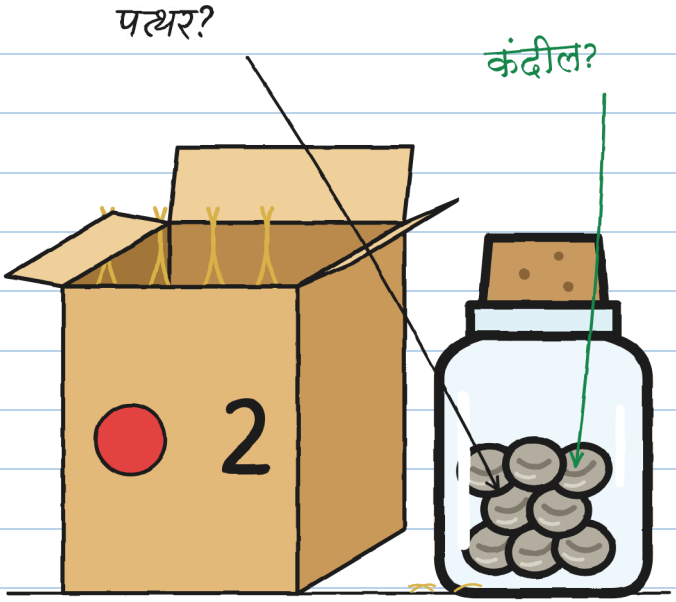


मैंने नं. 2 को देखा: R. को कुछ पहुँचाना तो आता था।

फ़्लोरा ने डिब्बा मेज़ पर रखा और बिना पूछे खोल दिया। अंदर, भूसे के बीच, काँच की एक शीशी थी जिसमें आठ छोटी स्लेटी गोलियाँ थीं।

"इस पर लिखा है कि बादल गरजने से पहले नहीं खोलना!" जूलिता चिल्लाई।

"मैंने डिब्बा खोला है, शीशी नहीं," फ़्लोरा ने कहा। "अंदर क्या है, यह मुझे पता है: R. ने मुझसे कंदील का वादा किया था, और हर बार पत्थर ही आते हैं।"



"कंदील क्या होता है?" मैंने पूछा।

फ़्लोरा ने फ़्रिज से एक पुरानी फ़ोटो उतारी: रात में नहर के किनारे का रास्ता, किनारे पर छोटी बत्तियों की क़तार।



"ये ऐसे पौधे हैं जो बिजली की चमक की रोशनी सँभालते हैं," फ़्लोरा ने कहा। "रात को वही लौटा देते हैं।"
"तो क्या इन्हें R. ने लगाया था?"
"बीज जगे हुए आते थे; मिट्टी में डालती थी। सोया हुआ बीज मैंने कभी नहीं देखा।"
"और कंदील?"
"बुझ गए। R. का आना बंद हो गया। अब यह भेजा जाता है।"

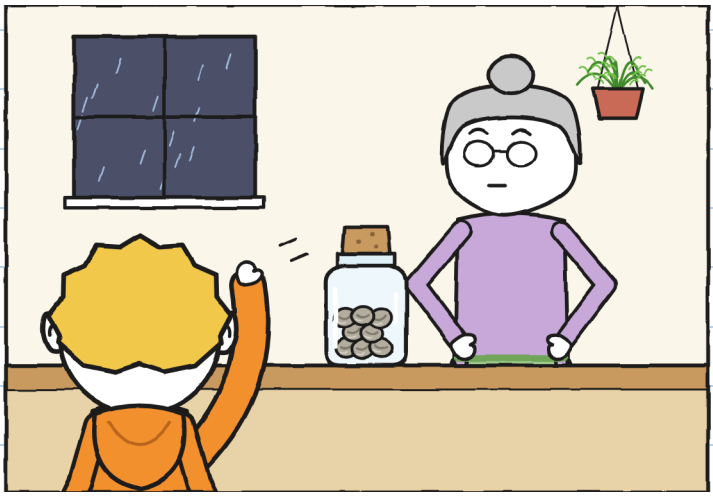
इसीलिए रात को नहर इतनी अँधेरी रहती है। इसीलिए पैदल पुल, नहर पार कराने वाला वह तख़्ता, इतना डरावना लगता है।

डरावना था। मुझे तो बहुत: मैंने इसे अँधेरे में पार किया। –ज.

"R. का वादा हमेशा पूरा होता है," फ़्लोरा ने कहा। "देर से सही, पर होता है। इसमें नहीं: तेईस बार यह शीशी मेरे पास आई है, और तेईस बार पत्थर निकले।"

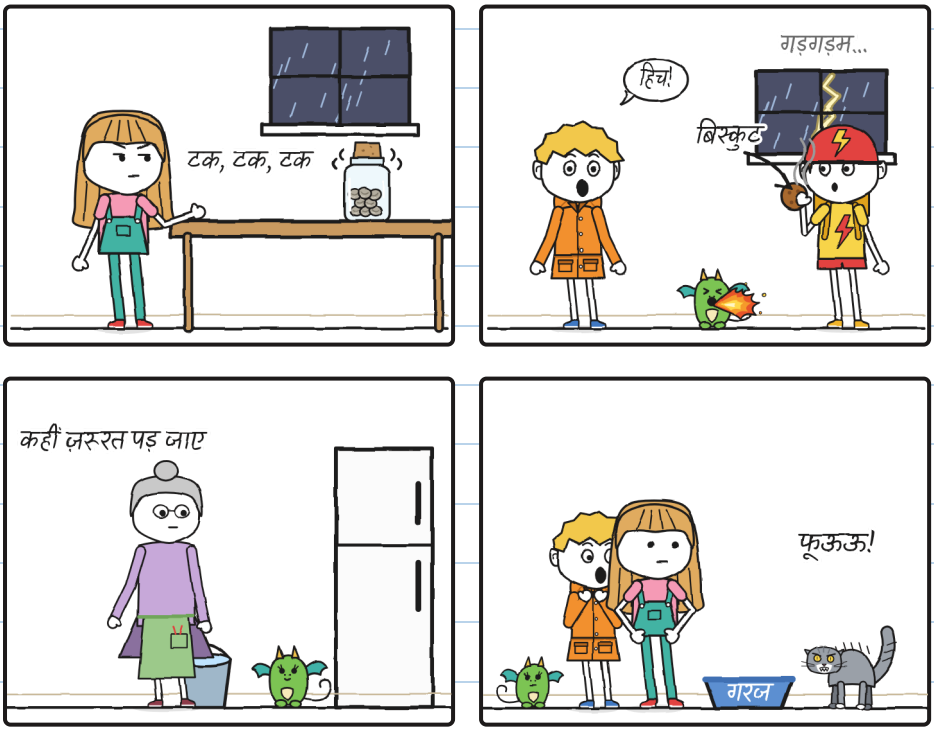
मैंने लेबल के बारे में सोचा। वह मुझे निर्देशों समेत रटा हुआ था। "क्या आपने कभी इसे खोलने के लिए गरज का इंतज़ार किया?" मैंने पूछा।

फ़्लोरा ने मुझे ऐसे देखा जैसे मैंने पूछ लिया हो कि पानी गीला होता है क्या।
"मैं किसी का इंतज़ार नहीं करती," उन्होंने कहा। "गरज का भी नहीं।"



फ़्लोरा के बिल्ले का नाम गरज है: उसके कटोरे पर उसका नाम लिखा है। वह बादल जैसा स्लेटी है और सच्ची गरज की तरह घुरघुराता है।

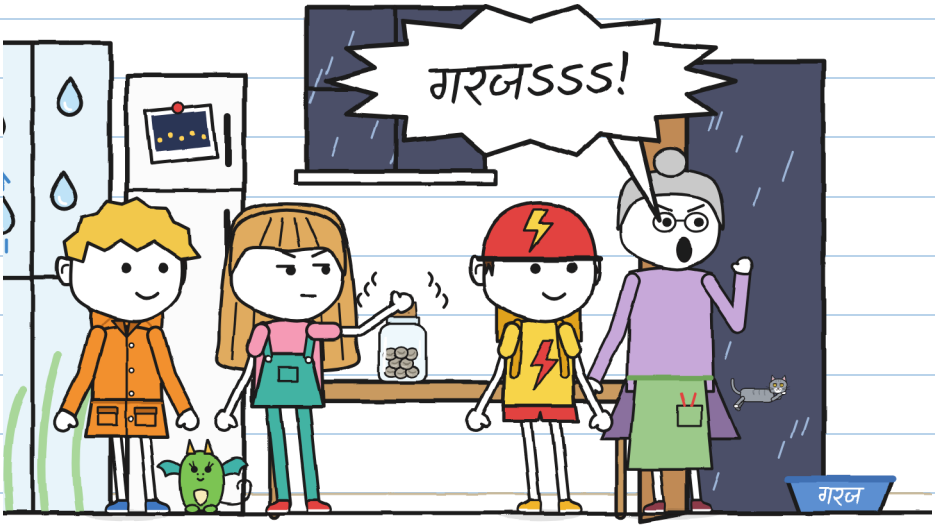
तूफ़ान का इंतज़ार करते हुए रसोई में बहुत कुछ हुआ और कुछ भी नहीं हुआ:



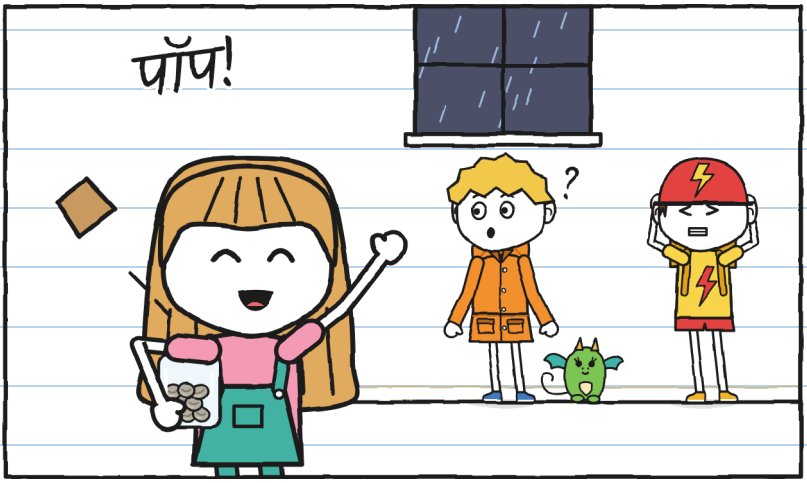
गरज से भी बुरा उसका इंतज़ार करना है। –ज.

शीशी मेज़ पर खनकती जा रही थी, हर पल और तेज़। जूलिता धीमी आवाज़ में गिन रही थी: "बारह हाथी।" "नौ।" मेज़ के नीचे उसका पैर कोई और ही गिनती गिन रहा था।

"तुम फ़र्श में छेद कर दोगी," मैंने कहा।
"मैं गिन रही हूँ।"
"तो अपने पैर को बता दो। वह आगे निकल गया है।"
तभी चूरा ने एक और छोटी-सी लपट छोड़ी, और गरज बिल्ली वाले दरवाज़े से तीर की तरह आँगन में भाग गया। फ़्लोरा ने पीछे का दरवाज़ा खोला और दहलीज़ से उसे ज़ोर से पुकारा:
"गरजऽऽऽ!"



और जूलिता ने शीशी खोल दी।



"बादल गरजा!" वह बोली।

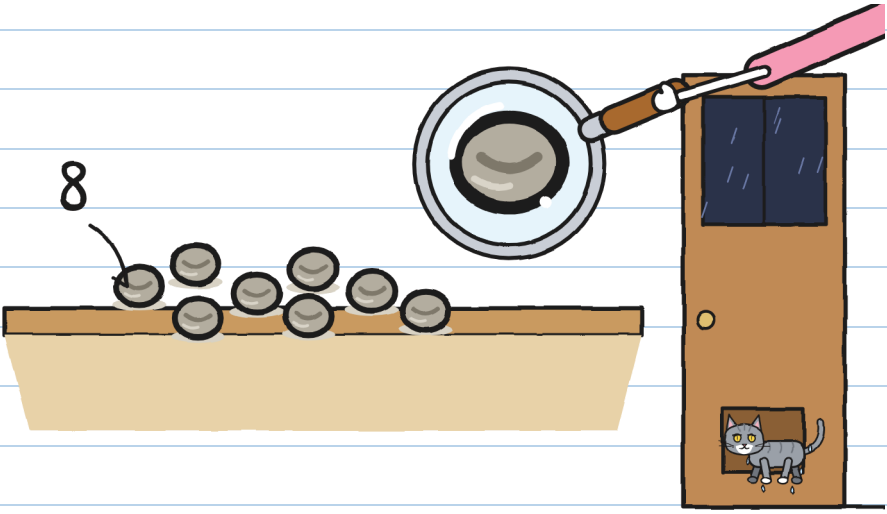
बादल नहीं गरजा था। फ़्लोरा चिल्लाई थीं। गरज तो बिल्ला है।

मैंने सुना "गरज!", जो ठीक वही था जिसका मैं इंतज़ार कर रही थी। किसी ने मुझे नहीं बताया कि वह बिल्ला है। –ज.

इसे मैंने पेज 17 पर लगा दिया।

वह पेज मैंने बाद में पढ़ा। –ज.

खुलते ही शीशी की खनखन बंद हो गई। अंदर बस आठ स्लेटी गोलियाँ थीं, ठंडी और शांत। जूलिता ने उन्हें मेज़ पर उँडेल दिया, ताकि आतशी शीशे से देख सके।
"इन पर एक लकीर है," उसने कहा। "जैसे बंद आँख।"



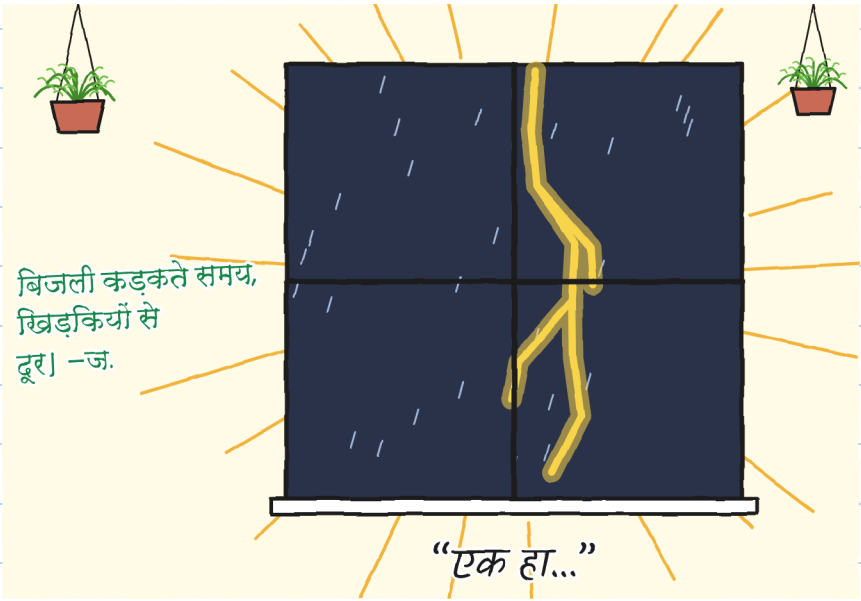
गरज अकेला ही बिल्ली वाले दरवाज़े से लौट आया, पूरा भीगा हुआ, और फ़्लोरा ने दरवाज़ा बंद कर दिया।
"पत्थर। हमेशा की तरह," उन्होंने कहा और जूलिता की ओर देखा।

जूलिता अपनी टी-शर्ट के रंग की हो गई।

"ये सो रहे हैं," मैंने कहा। "ये पत्थर नहीं हैं: ये बीज हैं। इसीलिए लिखा है 'बादल गरजने से पहले न खोलें'। हो सकता है कोई गरज इन्हें जगा दे। कोई तगड़ी वाली, जो खिड़कियों के काँच हिला दे।"

फ़्लोरा चुप हो गई। फिर बोली:
"अगर ये बीज हैं, तो साबित करके दिखाएँ।"

बाहर लगभग रात हो चुकी थी, जबकि अभी सिर्फ़ छह बजे थे। बिजली चमकी। जूलिता ने गिनना शुरू किया:



और फिर असली वाली आई।

गड़गड़ा हट!

गरज बिजली की चमक के साथ ही आ गई: तूफ़ान ठीक सिर पर था। मेज़, गिलास और खिड़कियों के काँच काँप उठे।

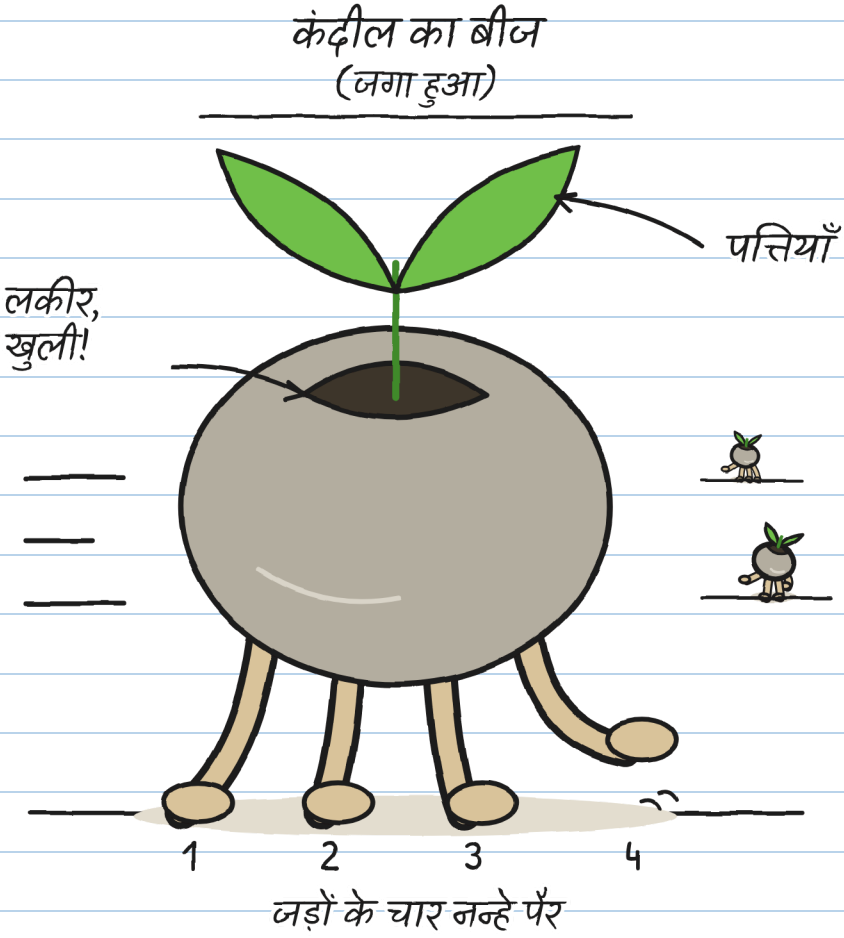
और बत्ती चली गई।



मैंने हिच किया। चूरा ने हिच किया, और उसके मुँह से बड़ी लपट निकली। एक सेकंड के लिए पूरी रसोई दिख गई।

मेज़ ख़ाली थी।





पत्थरों के पैर थे।

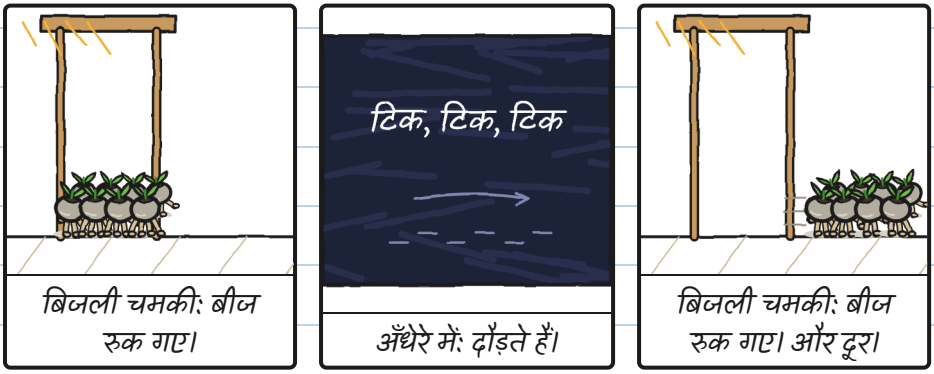
और जलूदबाज़ी। –ज.

अध्याय 3

जब तुम नहीं देखते, ये हिलते हैं

अँधेरे में नन्ही-सी बारिश जैसी आवाज़ सुनाई दे रही थी: टिक, टिक, टिक। जब बिजली फिर चमकी, तो बीज और दूर थे। और शांत। बहुत शांत। जैसे उन्होंने कुछ किया ही न हो।

वे तेज़ भाग रहे थे, पर हर चमक उन्हें रोक देती थी, और चमकें बहुत थीं। मैं उन्हें मेज़ के नीचे से देख रहा था। मैंने फ़्लोरा की छलनी, जो कील से लटकी थी, सिर पर रख ली थी: मेरे घर में, जब बादल गरजते हैं, मैं एक पहन लेता हूँ।



बिजली चमकी: बीज रुक गए।

अँधेरे में: दौड़ते हैं।

बिजली चमकी: बीज रुक गए। और दूर।

यह तो "स्टैचू" का खेल है। बीजों के साथ। –ज.

फ़्लोरा ने टॉर्च से एक बीज पर रोशनी डाली। बीज ज़मीन में गड़ा-सा रह गया। जैसे ही उन्होंने दूसरे पर रोशनी डाली, पहला मौक़ा पाकर भाग निकला।

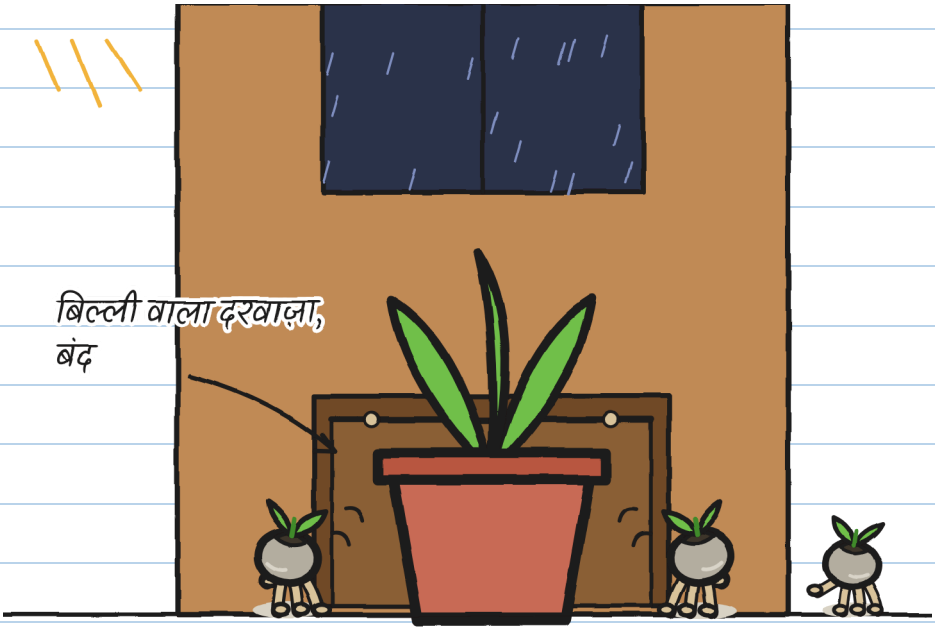
"ये बीज हैं! ये जाग रहे हैं!" फ़्लोरा चिल्लाईं।



पहली बार वे इस बात से ख़ुश लग रही थीं कि उनकी रसोई में कुछ दौड़ रहा है।
"हमें एक और टॉर्च चाहिए," मैंने कहा।
"तो कोई और उपाय सोचते रहो। मेरे पास बस यही एक है।"

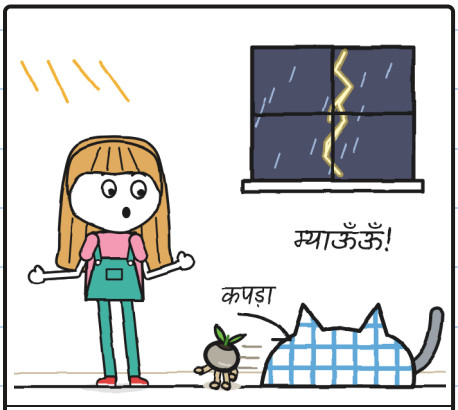
आठ बीज और एक टॉर्च। दूसरा बीज भी भाग गया।

सब बिल्ली वाले दरवाज़े की ओर जा रहे थे।
"वे तूफ़ान की गीली मिट्टी ढूँढ रहे हैं," फ़्लोरा ने कहा और सामने एक विशाल गमला रख दिया। "घर में सिर्फ़ नल के पानी से सींची मिट्टी है, ग्रीनहाउस में भी, और वह इनके काम की नहीं। बाहर मिट्टी बहुत कम है: फ़र्श के पत्थर, एक पगडंडी और नहर। अगर ये बाहर निकले, तो बारिश इन्हें बहाकर पानी में ले जाएगी।"

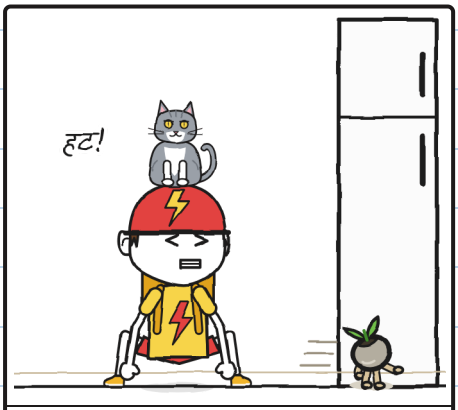


बिल्ली वाला दरवाज़ा बंद हो गया। पर अब वे अँधेरे में पूरी रसोई में फैल गए थे, और रसोई में छिपने की सौ जगहें होती हैं।

हमने सब कुछ आज़माया:



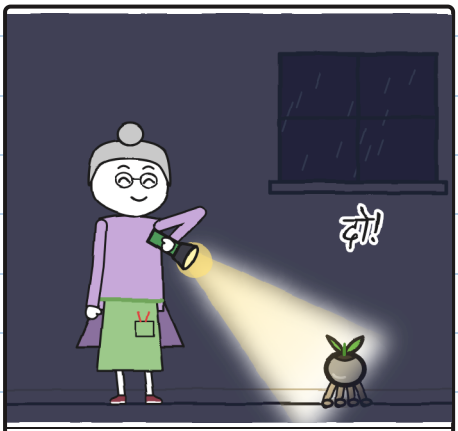
जूलिता, कपड़े से: उसने गरज को पकड़ लिया।



टोन्यो, हाथों से: गरज ने ही उसे पकड़ लिया।



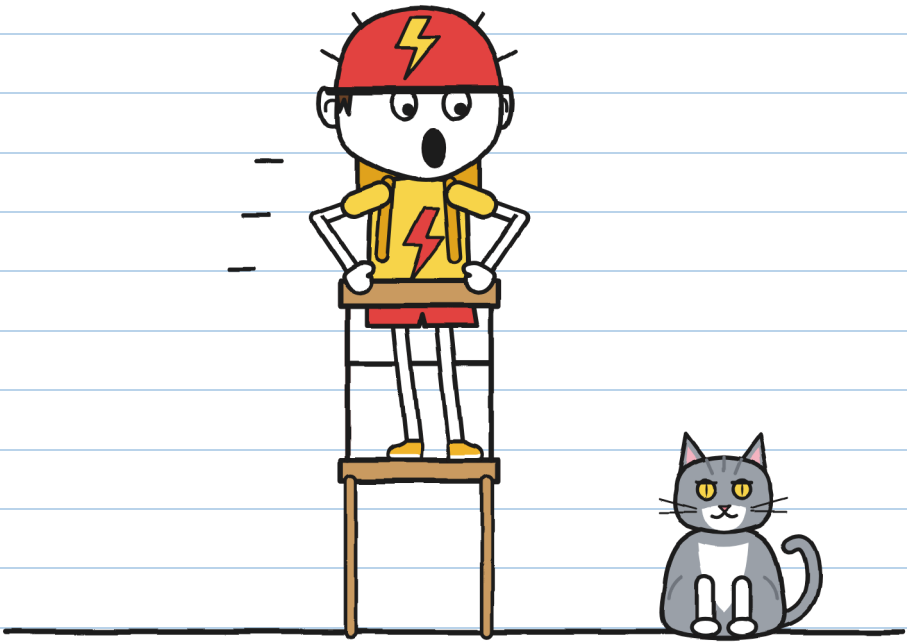
चूरा, अपनी लपट से: एक!



फ़्लोरा, टॉर्च से: दो!

गरज भी उनका पीछा कर रहा था। वह लगभग अँधेरे में भी देख लेता है। हम नहीं।

टोन्यो को तूफ़ान से डर नहीं लगता। टोन्यो को बिल्लियों से डर लगता है।

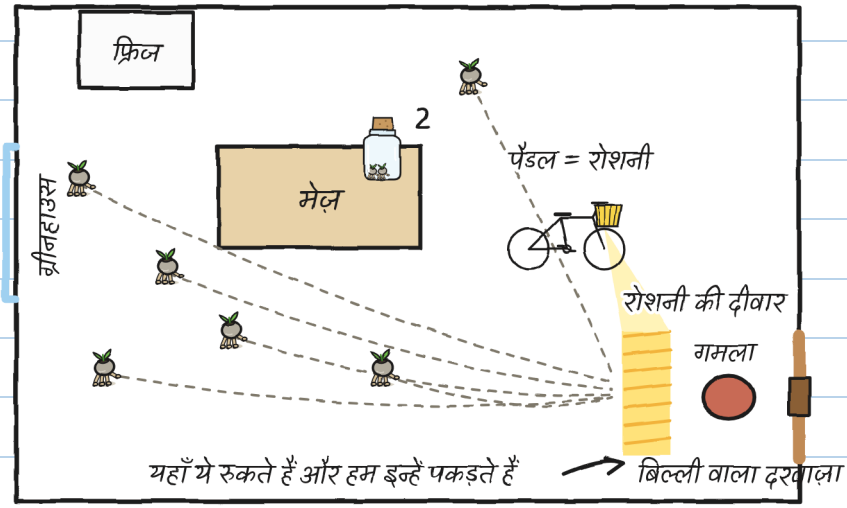


"अरे, यह बिल्ली नहीं है!" जूलिता ने उससे कहा। "यह गरज है!"
"और भी बुरा!"

दो डर और नाम सिर्फ़ एक। –ज.

मैं अब भी मेज़ के नीचे था, सिर पर छलनी पहने हुए। हर बिजली की चमक में मुझे पूरा फ़र्श दिख जाता था, और मैंने कुछ देखा: बीज पूरी रसोई में घूम रहे थे, पर हर बार लौटकर बिल्ली वाले दरवाज़े के गमले को धकेलने आ जाते थे।

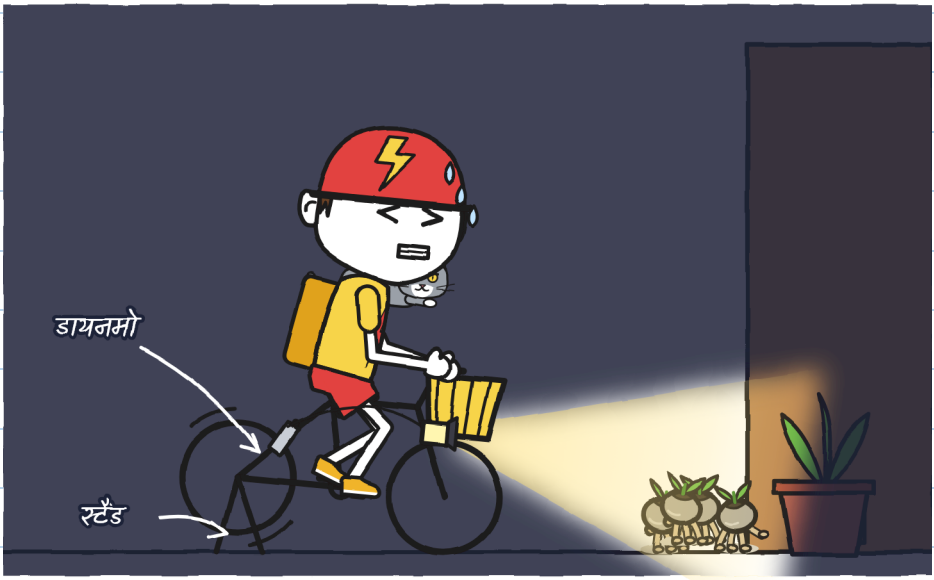
हमें उनका पीछा नहीं करना था। हमें पता था कि वे कहाँ जाएँगे।



मैंने नक़्शा बनाया।
"टोन्यो, तुम्हारी हेडलाइट पैडल मारने से जलती है?"
"बिल्कुल।"
"तो आज तुम रोशनी की डिलीवरी करोगे।"

हमने साइकिल को उसके स्टैंड पर खड़ा किया, हेडलाइट बिल्ली वाले दरवाज़े की ओर करके। "बिजली" का डायनमो पीछे के पहिए से लगा है: पहिया घूमे तो रोशनी होती है। और टोन्यो ने पैंडल मारना शुरू किया।

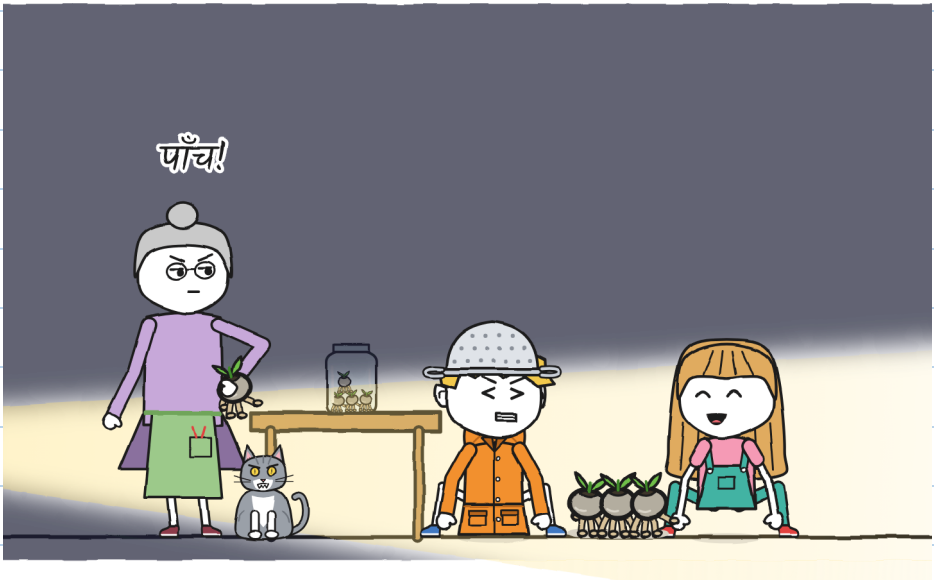
उसने इतने पैंडल मारे जितने पहले कभी नहीं मारे थे। ख़ासकर तब, जब गरज उसके ऊपर चढ़ गया।



आख़िरकार "बिजली" किसी काम की निकली। –ज.

बीज रोशनी तक पहुँचते ही रुक जाते, पंजों के बल, जैसे चोरी पकड़ी गई हो। हम उन्हें एक-एक करके शीशी में डालते जा रहे थे। तीन। चार।

गरज ने एक और बीज मुँह में पकड़ लिया, और फ़्लोरा ने दो उँगलियों से उसे निकाल लिया।
"पाँच!" उन्होंने कहा।



छह।

फ़्लोरा ने शीशी का ढक्कन बंद कर दिया, ताकि कोई बीज भाग न जाए, और हमारी मदद करने झुकीं। तभी गरज उछलकर मेज़ पर चढ़ा और उसे गिरा दिया।

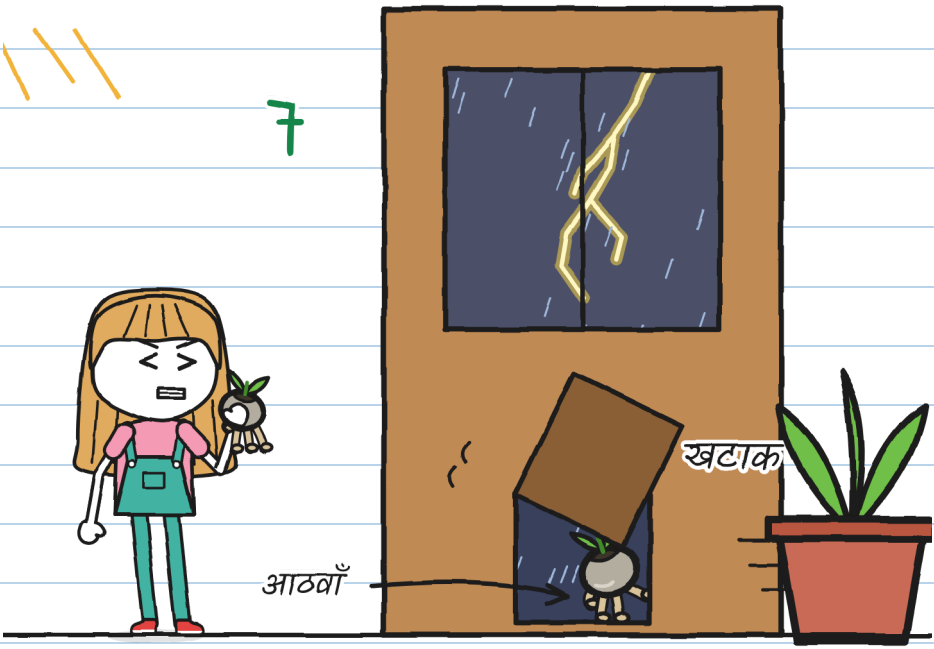


टोन्यो ने उसे हवा में ही लपक लिया, फ़र्श से छूने से पहले। "'बिजली'," उसने कहा। "एक सेकंड में या मुफ़्त।"

पर उसने पैंडल मारना छोड़ दिया था, और रोशनी बुझ गई। और गरज को रोकना किसी के बस में नहीं: वह तीर की तरह बिल्ली वाले दरवाज़े की ओर भागा।

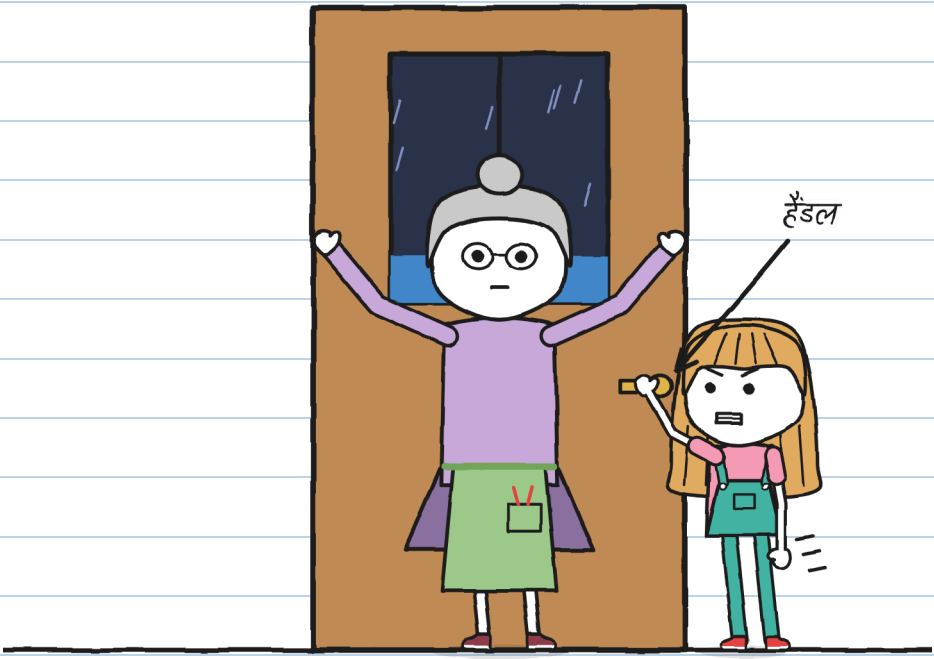
अँधेरे में: टिक, टिक, टिक। गरज ने गमला धकेला: घिस्स। और बिल्ली वाला दरवाज़ा खटाक बोला।

जब बिजली फिर चमकी, तो फ़र्श पर सिर्फ़ एक बीज बचा था, और जूलिता ने उसे पकड़ लिया। सात।



आठवाँ बिल्ली वाले दरवाज़े से बाहर चला गया था।

“मैं उसे लेकर आती हूँ!” जूलिता ने कहा, उसका हाथ पहले से दरवाज़े के हैंडल पर था।
“बिजली कड़क रही हो तो इस घर से कोई बाहर नहीं जाएगा,” फ़्लोरा ने कहा और दरवाज़े के सामने खड़ी हो गईं। वे बहस के मूड में नहीं थीं।



जूलिता ने बहस नहीं की। पर हैंडल भी नहीं छोड़ा।
थोड़ी देर बाद बिल्ली वाले दरवाज़े ने खटाक किया। गरज था, भीगा हुआ। आठवें बीज के बिना।

“बिजली... एक हाथी, दो हाथी।
गड़गड़म।
“दो,” जूलिता ने गिना। “अब भी बहुत पास है।”

“तो अब इन्हें लगाते हैं,” फ़्लोरा ने कहा। “तूफ़ान जाने से पहले। और अँधेरे में।”
“बिजलियों के बीच?” जूलिता ने पूछा।
फ़्लोरा ने काँच पर ऊपर चढ़ती बूँदों को जाँचा।
“जादू अभी बना हुआ है। बिजलियाँ बाहर रहेंगी। हम अंदर।”



फिर उन्होंने चूरा की ओर देखते हुए “अँधेरे में” दोहराया।

चूरा ने मेरी तरफ़ देखा। और हिच किया।

अध्याय ५

हिच

फ़्लोरा ने बताया कि कंदील कैसे लगाया जाता है, जैसा R. ने उन्हें सिखाया था। मैंने इसे ऑफ़िशियल लिखावट में लिख लिया:

कंदील कैसे लगाते हैं

1. 

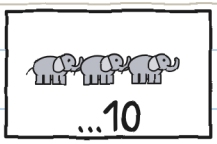
   तूफ़ान की गीली मिट्टी।
   (नल वाली नहीं चलेगी।)

2. 

   शीशी को मिट्टी पर खोलना।
   (पहले खोलोगे, तो वे भाग जाएँगे।)

3. 

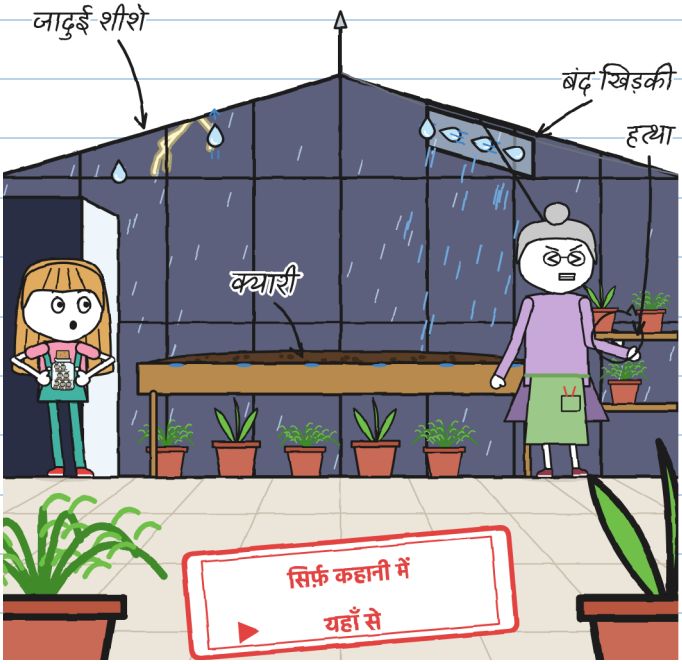
   सब कुछ अँधेरे में: वे ख़ुद
   मिट्टी में उतर जाते हैं।
   (अगर तुम इन्हें ख़ुद दबाओगे, तो ये नहीं उगेंगे।)

4. 

   तूफ़ान जाने से पहले:
   दस से ज़्यादा हाथी होने पर,
   अगली बार तक नहीं लगते।

जगाने के लिए: शून्य हाथी। लगाने के लिए: दस तक। ग्यारह पर वे फिर सो जाते हैं। –ज.

फ़्लोरा ने छत का हत्था घुमाया। खिड़की नहीं खुली: बल्कि काँच पर चढ़ती पेंट की हुई बूँदें रुकीं और नीचे उतरने लगीं।
बारिश ऐसे अंदर आ गई जैसे वहाँ काँच हो ही नहीं, और क्यारी पर गिरी, मिट्टी से भरी एक लंबी मेज़ पर।
"सब क्यारी में। एक बूँद भी फ़र्श पर नहीं," फ़्लोरा ने बारिश को हुक्म दिया।



ये शीशे सिर्फ़ कहानी में होते हैं। असली तूफ़ान में ग्रीनहाउस बिल्कुल नहीं (पेज 76)। –ज.

"तूफ़ान की गीली मिट्टी," उन्होंने कहा। "अब सब अँधेरे में।"

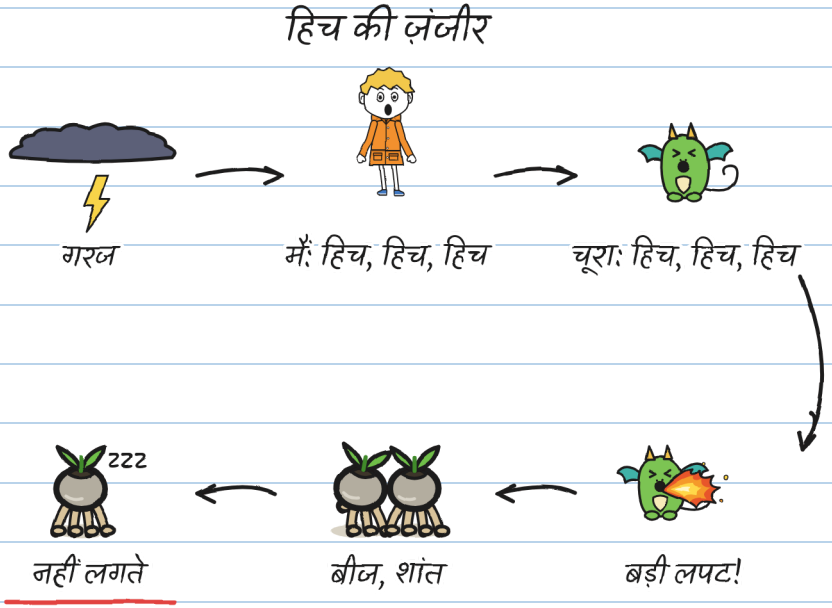
पर चूरा पहले से अंदर थी: दरवाज़ा खुलते समय वह फ़्लोरा के पैरों के बीच से चुपके से घुस गई थी, किसी को पता नहीं चला। वह क्यारी के नीचे, गमलों के बीच थी।

फ़्लोरा ने उसे सावधानी से खींचा। चूरा ने चारों पंजों से गमलों को पकड़ लिया। वेरा ने हमें पहले ही बता दिया था।



और रसोई में जब भी मुझे हिच आती, ग्रीनहाउस में चूरा जल उठती।

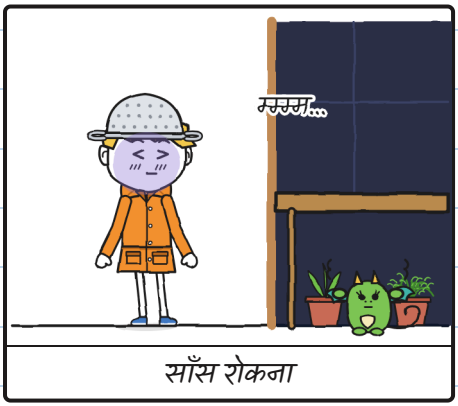
मैंने इसे समझने के लिए बनाया:



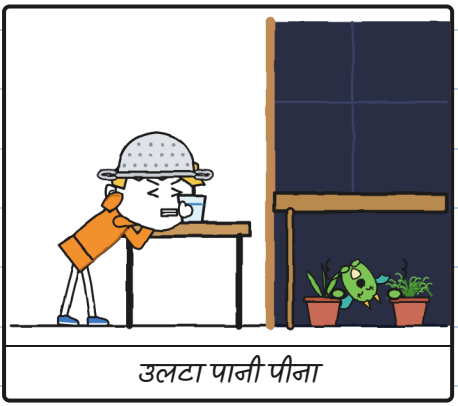
रसोई में हिच हमारे काम आ रही थी: एक बड़ी लपट, एक रुका हुआ बीज, एक पकड़ा हुआ बीज। ग्रीनहाउस में उसने हमें डुबो दिया: हर तीन सेकंड में एक बड़ी लपट, तो अँधेरा कभी इतनी देर रहता ही नहीं था जितनी देर उन्हें मिट्टी में उतरने के लिए चाहिए।

ज़ंजीर को तोड़ना होगा। सबसे आसान कड़ी तुम हो। प्यार से। –ज.

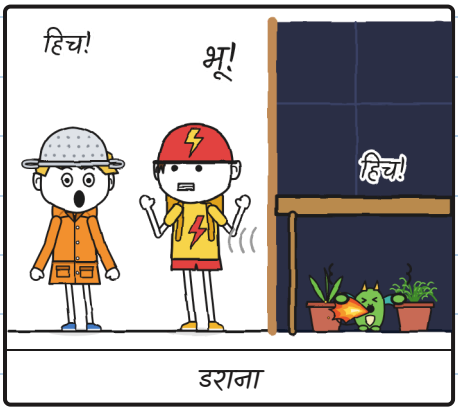
हमने हिचकी के सारे इलाज आज़माए:



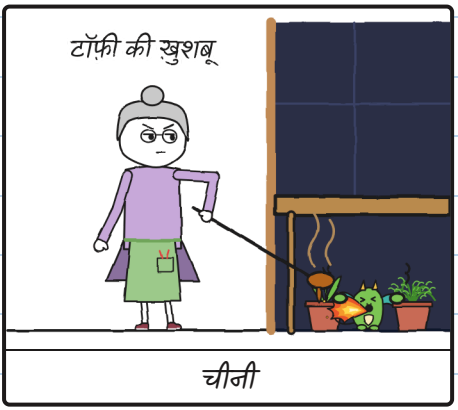
साँस रोकना



उलटा पानी पीना



डराना



चीनी

चूरा ने उन सबकी नक़ल उतारी, एक-एक करके, बिना अपने गमलों को छोड़े।

इलाज: शून्य। हिचकियाँ: बहुत सारी। –ज.

"चार हाथी। पाँच।"

बादल गरजा। जूलिता ने बताया कि वह बिजली पहले से दूर गिरी थी।

सातों बीज शीशी के अंदर चक्कर काट रहे थे, बाहर निकलने का रास्ता ढूँढते हुए। मुझे अब भी हिच आ रही थी।



"और अगर हम ग्यारह तक पहुँच गए?" मैंने पूछा।

जूलिता ने काँच से चिपके नन्हे पैरों को देखा।

"फिर से पत्थर।"

फिर उसने मेरी ओर देखा।

"चूरा तुम्हारे डर की नक़ल उतार रही है," जूलिता ने कहा।
"वह कुछ और भी तो उतार सकती है," मैंने कहा।
मैंने हिच किया और क्यारी के नीचे एक बड़ी लपट जल उठी। चूरा अपनी राय बदलने को तैयार नहीं लग रही थी।
"अगर हम उसे रसोई में ले आएँ?" मैंने पूछा।
"वह पकड़ लेती है। तुम देख चुके हो।"
जूलिता ने आवाज़ धीमी कर दी।
"पहले, उसके पास रहो।"

मेरे पास डर का कोई इलाज नहीं था। मेरे पास बस एक प्लान था जिससे वह किसी को दिखे नहीं, और वह चलना बंद कर चुका था:

मेरा प्लान, ताकि किसी को पता न चले कि मुझे गरज से डर लगता है:

1. कहना कि मुझे गरज बहुत पसंद है।
2. ~~हिच नहीं करना।~~ हिच हिच हिच हिच हिच
3. ???

और 3 नंबर? –ज.

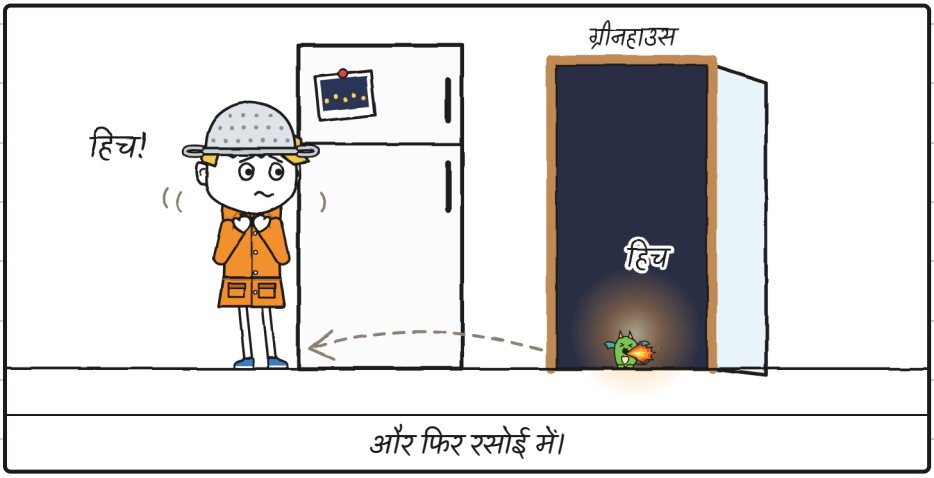
मैंने कोशिश की। सच में।



एक पैर अंदर।



एक गरज।



और फिर रसोई में।

पूरे मोहल्ले में सबसे ज़ोर की गरज ग्रीनहाउस में ही सुनाई देती है।

दरवाज़े से मैंने काँच की छत से ऊपर देखा। और बिजली की दो चमकों के बीच मुझे वे दिख गए, छत से बहुत ऊपर: वेरा के ड्रैगन, तूफ़ान के बीच उड़ते हुए। वे तब उड़ने निकलते हैं जब कोई ऊपर नहीं देखता। इसीलिए वेरा हमारे साथ नहीं आईं: तूफ़ान में वे उन पर नज़र रखती हैं।



वे हिच नहीं कर रहे थे।

“चलो, शिकारी,” टोन्यो ने कहा।

मैं इंतज़ार करता रहा कि वह हँसेगा। वह नहीं हँसा।

मैंने छलनी उतारकर फ़्लोरा को दे दी, जिन्होंने उसे दोनों हत्थों से ऐसे पकड़ा जैसे वह सचमुच का हेलमेट हो।



और मैं अंदर गया।

छलनी बिजली को नहीं रोकती। डर के लिए कभी-कभी रोक लेती है। –ज.

अंदर बारिश ऐसे बज रही थी जैसे हज़ार उँगलियाँ एक साथ ढोल बजा रही हों। मैं घुटनों के बल क्यारी के नीचे घुस गया। चूरा वहीं थी, गोला बनी हुई, मेरी तरह काँपती हुई।



गड़गड़म! मैंने हिच किया। चूरा ने हिच किया। बड़ी लपट ने हम दोनों को रोशन कर दिया।

हम क्यारी के नीचे दो तूफ़ान के शिकारी थे।

तभी दरवाज़े से जूलिता ने धीमे से कहा, हँसे बिना:



"मेरे साथ गिनो।"

अध्याय 5

मेरे साथ गिनो

और हमने गिना। वह दरवाज़े से और मैं क्यारी के नीचे, चूरा मेरे रेनकोट से सटी हुई काँपती हुई।

बिजली चमकी।

"एक हाथी। दो हाथी। तीन। चार। पाँच। छह।"

गड़गड़म।

"छह: करीब दो किलोमीटर," जूलिता ने कहा। "वह बिजली और दूर गिरी। हम अब भी सुरक्षित हैं।"



मैंने छह हाथी गिन लिए थे और डर अब भी मेरे साथ था।

दो बार यह कहना कि मुझे तूफ़ान पसंद हैं, काम नहीं आया था।
चूरा मेरी कही बात की नक़ल नहीं उतारती थी: वह उसकी नक़ल उतारती थी जो मेरे साथ होता था।
उसने मेरी ओर देखा। इस बार मैंने कोई बहाना नहीं ढूँढा।

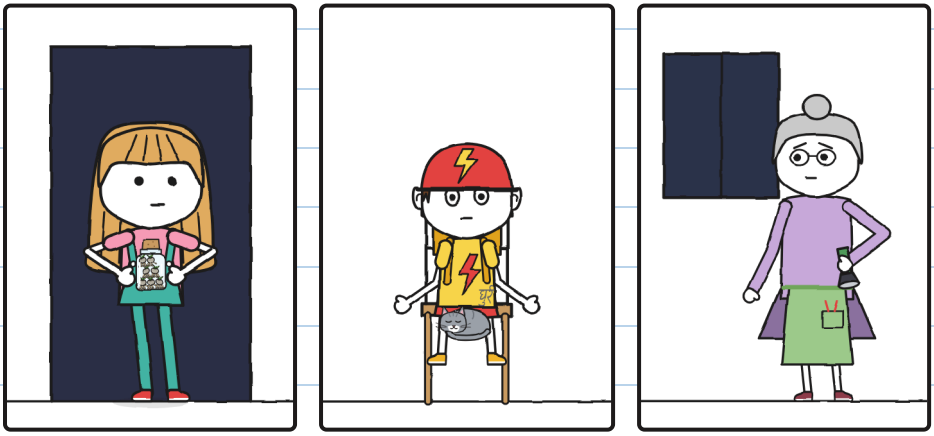


"मुझे गरज से डर लगता है।"

"मुझे पता है," जूलिता ने कहा। "तुमने आज सुबह इसे पेज 6 पर बनाया था। मैं तुम्हारे कहने का इंतज़ार कर रही थी।"

"मुझे बिल्लियों से डर लगता है," टोन्यो ने कहा, जिसके घुटनों पर गरज सोया हुआ था और जो हिलने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था।

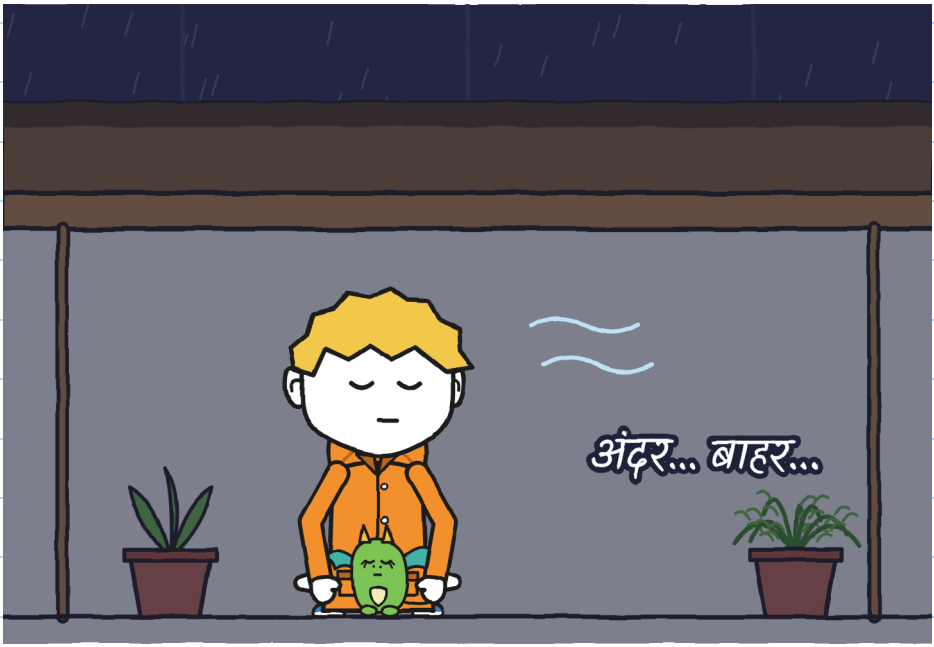
"और मुझे उस चीज़ का इंतज़ार करने से डर लगता है जो आती नहीं," फ़्लोरा ने कहा। "इसीलिए बाक़ी बार मैं शीशी को आते ही खोल देती थी।"



और मुझे पैदल पुलों से। यह तो तुम सब जानते हो। –ज.

कोई नहीं हँसा। बारिश वैसे ही गिर रही थी, पर क्यारी के नीचे मैं अब अकेला नहीं था।

मैंने धीरे-धीरे साँस ली। चूरा ने भी धीरे-धीरे साँस ली।

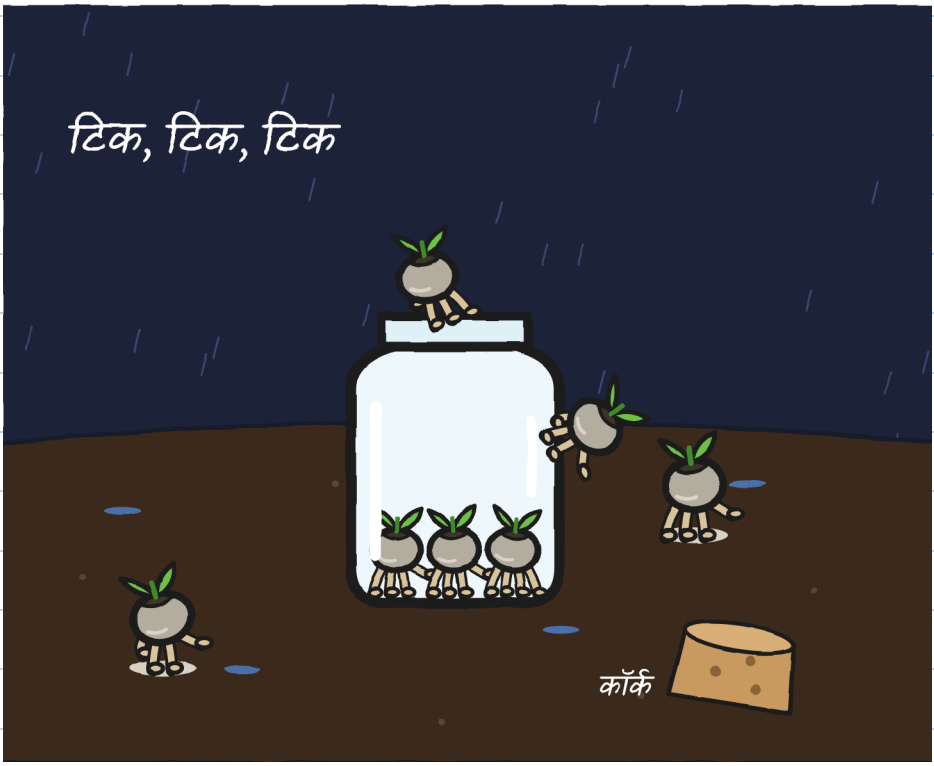


बिजली चमकी। हमने साथ-साथ नौ तक गिना। गड़गड़म।

और मुझे हिच नहीं आई। न उस गरज पर, न अगली पर।

“अब!” फ़्लोरा ने फुसफुसाकर कहा।

जूलिता पंजों के बल अँधेरे में अंदर गई, शीशी को गीली मिट्टी पर रखा और उसका ढक्कन खोल दिया। फिर बिना आवाज़ किए दरवाज़े पर लौट आई।

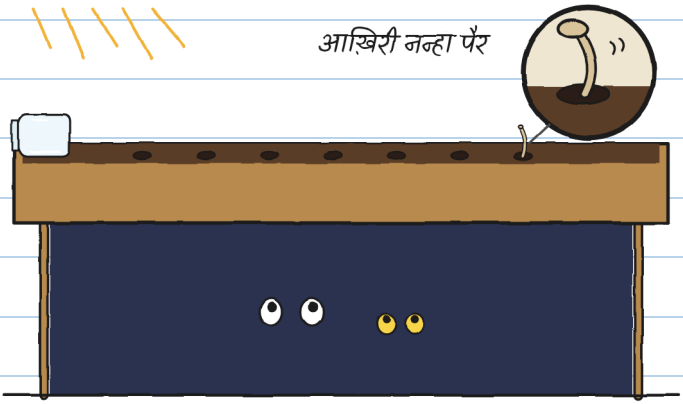


टिक, टिक, टिक। अँधेरे में शीशी से कुछ निकल रहा था।

बहुत दूर बिजली चमकी। हमने बिना आवाज़ के, सिर्फ़ होंठों से, दस हाथी तक गिना। गड़गड़म।

दस: आख़िरी गिनती जो काम की थी।

अगली बिजली में हमने उसे देखा:



शीशी ख़ाली थी। मिट्टी में सात छोटे-छोटे गड्ढे थे, और आख़िरी में अब भी एक नन्हा पैर बाहर झाँक रहा था।

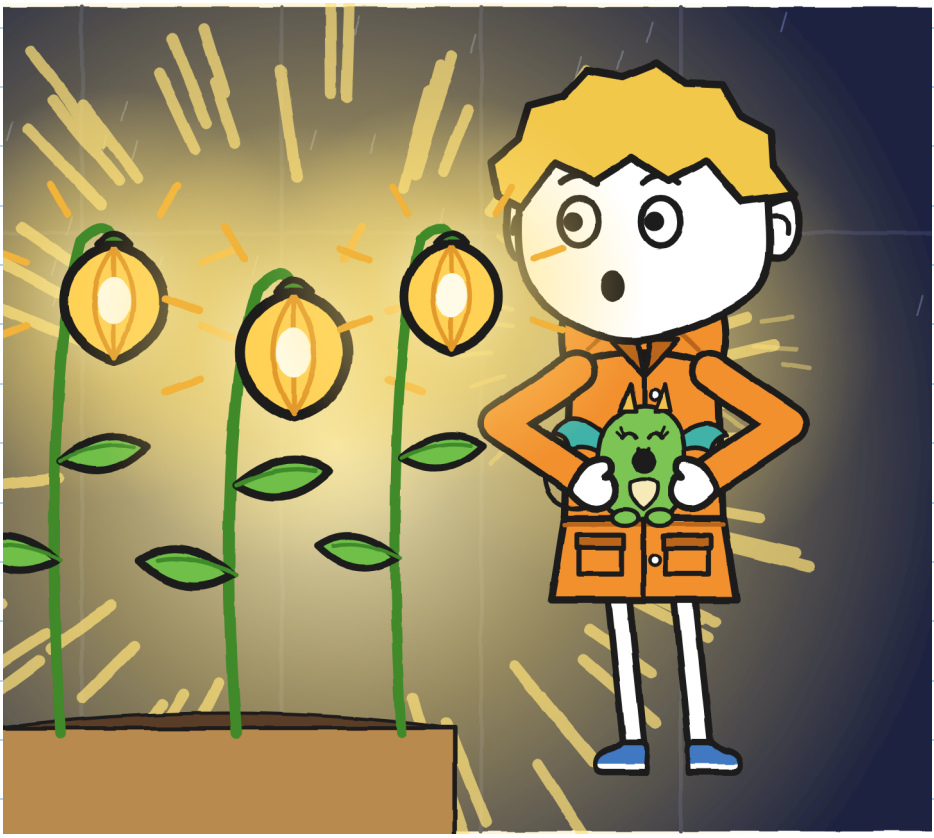
फिर थोड़ी देर कुछ नहीं हुआ। बस हम, अँधेरे में, मिट्टी की क्यारी को देखते हुए।

और तभी पहला जल उठा।

सात कंदील। हर एक के अंदर बिजली का एक छोटा-सा टुकड़ा।

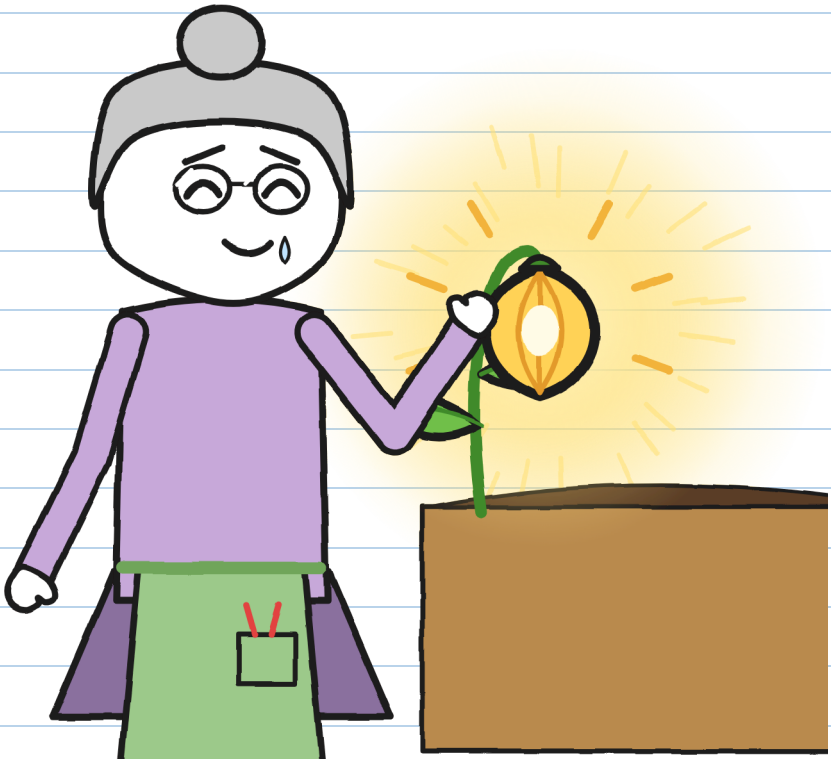


चूरा ने हिच नहीं की। वह मुँह खोले कंदीलों को देख रही थी, ठीक मेरी तरह, और मैं समझ गया कि अब वह मेरा डर नक़ल नहीं उतार रही थी। वह यह उतार रही थी।



फ़्लोरा बहुत देर तक कुछ नहीं बोलीं। फिर उन्होंने एक कंदील को उँगली की नोक से छुआ, धीरे से, जैसे कोई उस चीज़ को छूता है जिसका उसने बहुत इंतज़ार किया हो।

"नहर का रास्ता ऐसा ही दिखता था," उन्होंने कहा।



मैंने भी एक को छुआ। चूरा ने भी। वह गुनगुना था, धूप में रखे पत्थर जैसा।

फ़्लोरा ने हत्था घुमाकर बारिश रोकी और दस्तख़त करने के लिए एक पेन निकाला।

आख़िरकार।

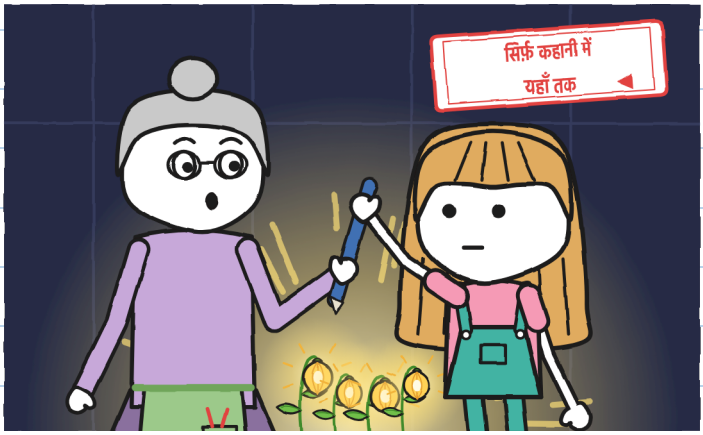
जूलिता ने दो उँगलियों से उसे रोक दिया।

"अभी नहीं।"

वह सातों कंदीलों को देखती रही।

"आठवाँ बाक़ी है। शीशी मैंने समय से पहले खोली थी। हमें उसे ढूँढना होगा।"

फिर वह रसोई में गई, डिब्बे से लेबल उतारा और उसे अपनी डंगरी की जेब में रख लिया।



पहुँचाओ तो पूरा पहुँचाओ। –ज.

हम सब रसोई में लौट आए।

"आँगन अभी बंद है," फ़्लोरा ने कहा। "हम अभी बाहर नहीं जाएँगे।"

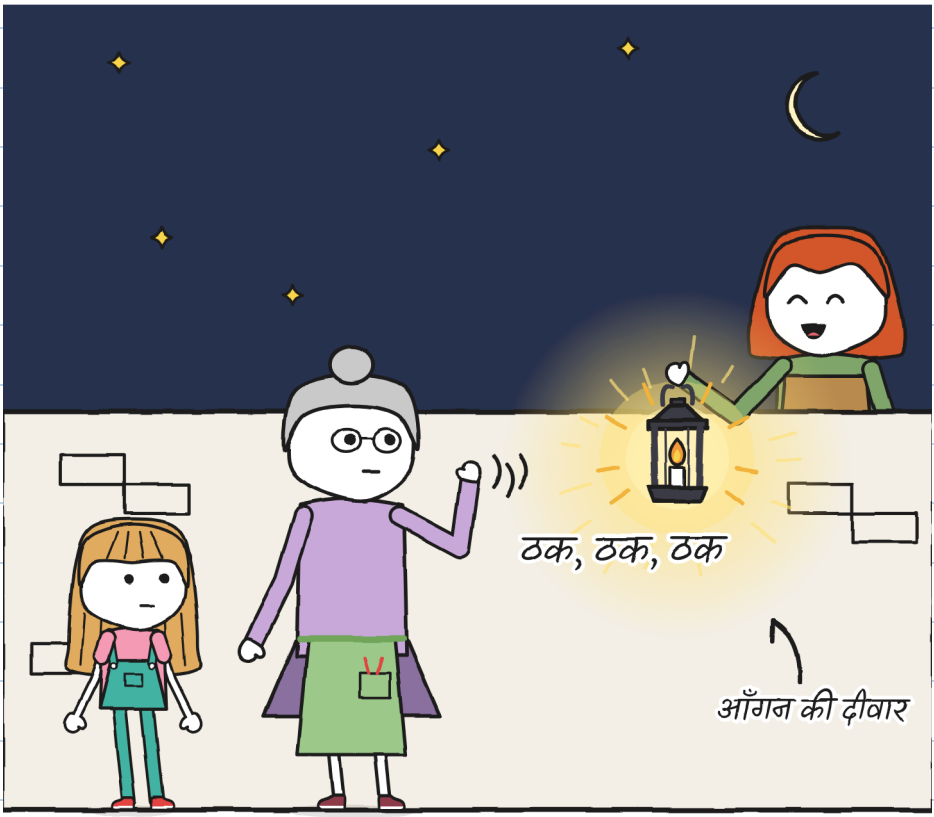
हम तब तक रुके रहे जब तक जूलिता के पास गिनने के लिए कोई बिजली नहीं बची, और फिर आख़िरी गरज से गिनकर आधा घंटा और। अब बारिश नहीं हो रही थी। तूफ़ान जा चुका था।



और आठवाँ बाहर कहीं था, अँधेरे में। अगर उसे समय पर मिट्टी नहीं मिली, तो वह फिर सो गया होगा: एक और पत्थर। और फ़्लोरा के दस्तख़त के बिना, सुबह होते ही नं. 2 उड़कर अपने शेल्फ़ पर लौट आएगा।

“चलो, उसे ढूँढते हैं,” जूलिता ने कहा।

फ़्लोरा ने रात को देखा। फिर उन्होंने आँगन की दीवार पर तीन बार थपथपाया, जो ड्रैगनों के घर की दीवार है, जैसा वेरा ने बताया था।



“इस बार,” उन्होंने कहा, “तुम अकेले नहीं जा रहे।”

अध्याय 6

आठवाँ बीज

हम फ़्लोरा और वेरा के साथ निकले, एक लालटेन और एक साइकिल लेकर। जूलिता के पास ख़ाली शीशी थी और लेबल उसकी डंगरी की जेब में था; मेरे रेनकोट के अंदर चूरा थी। उसका सिर वहाँ से बाहर निकला था जहाँ मेरी ठुड्डी थी।

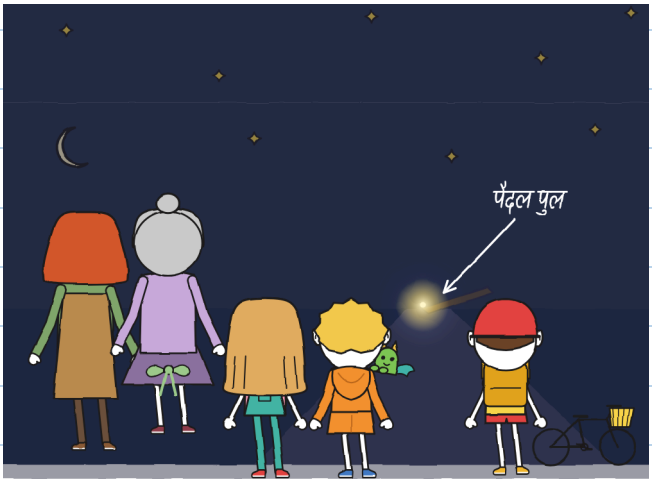
हमने आँगन में ढूँढा, पगडंडी पर ढूँढा, नहर के किनारे ढूँढा।



कुछ नहीं। अगर आठवाँ सो गया था, तो वह उन सारे गीले पत्थरों में से कोई भी हो सकता था।

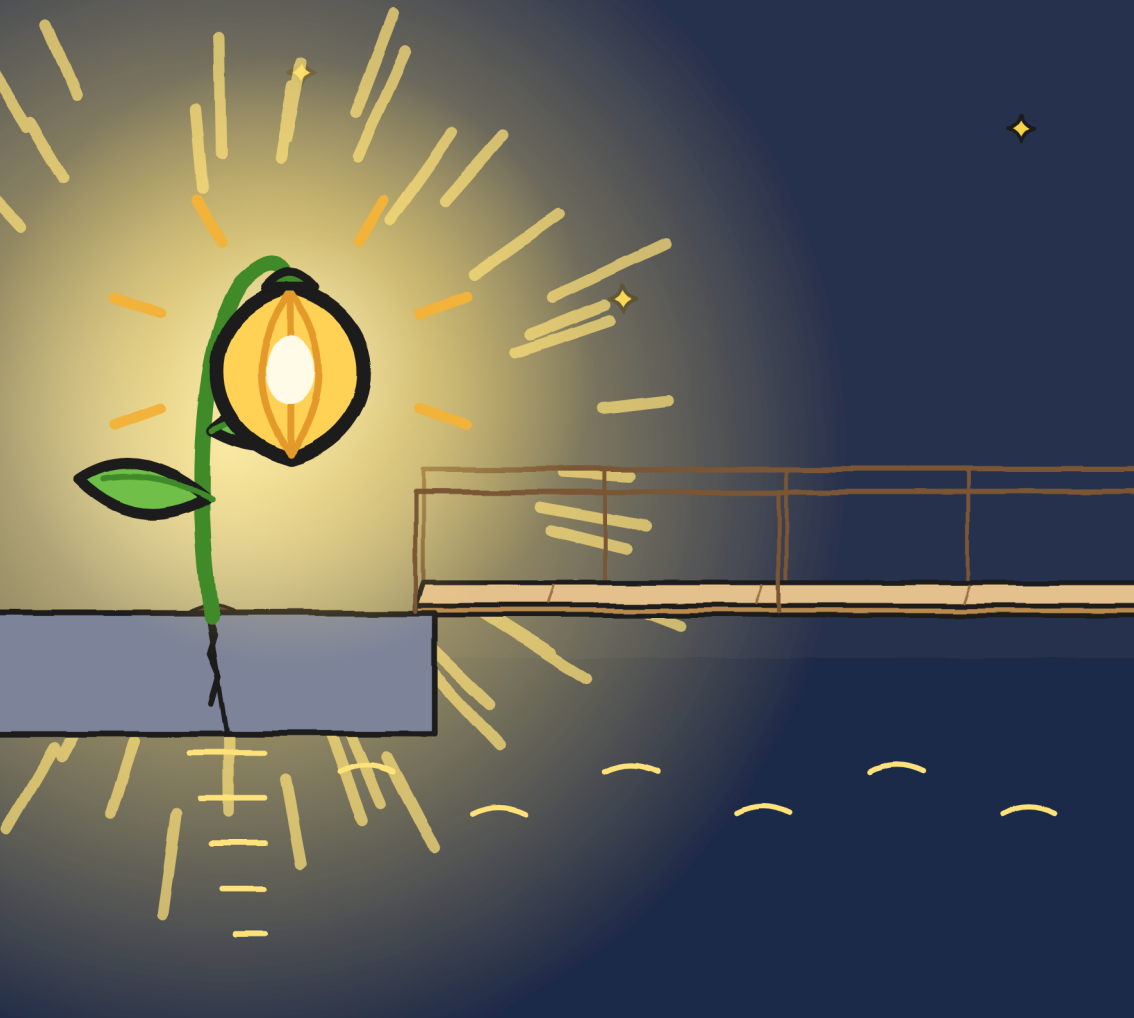
लालटेन की रोशनी गीले पत्थरों पर चमक रही थी। इतनी कि उनके बीच कुछ देखना मुश्किल था।
तभी मैंने सोचा: नया-नया उगा कंदील बहुत धीमा चमकेगा। हम एक नन्ही-सी बत्ती ढूँढ रहे थे और हमारी तीनों बत्तियाँ जल रही थीं: वे उसे निगल जाती थीं।
"रुको। सब बुझा दो।"

टोन्यो ने साइकिल रोकी, वेरा ने लालटेन की लौ धीमी की और फ़्लोरा ने टॉर्च बुझा दी।
हम स्थिर खड़े रहे। अँधेरे में, रास्ते के छोर पर, एक नन्ही-सी बत्ती दिखाई दी।



पैदल पुल के सिरे पर।

मुझे लगता है कि बारिश आठवें बीज को पगडंडी से बहाकर रास्ते तक ले आई थी, और वह दो पत्थरों के बीच की एक दरार में अटक गया था, जहाँ एक उँगली भर गीली मिट्टी थी, ठीक वहाँ जहाँ पैदल पुल शुरू होता है। वहाँ वह अपने आप उग गया। दूर से, एक नन्ही-सी बत्ती। पास से, उसने सब कुछ रोशन कर दिया।



जूलिता बहुत देर तक पैंदल पुल को देखती रही। रोशनी में वह कुछ और ही लग रहा था: छोटा, चौड़ा, पानी से ज़्यादा लकड़ी जैसा।

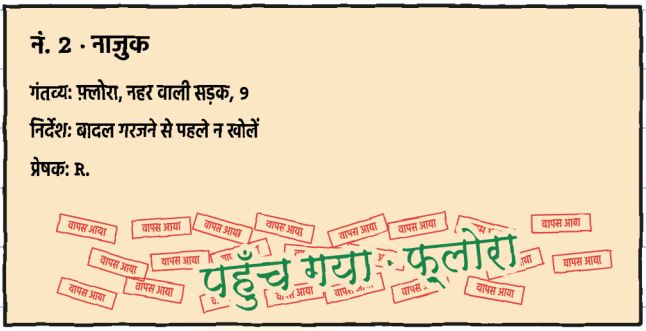
उसने पैंदल पुल पर एक पैर रखा। सिर्फ़ एक। फिर हटा लिया।

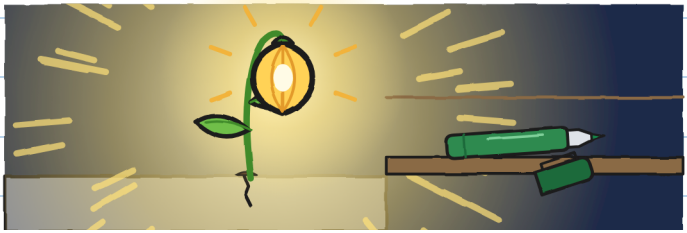


दूर से अब डर नहीं लगता। पास से भी लगभग नहीं। –ज.

“यह यहीं रहेगा,” फ़्लोरा ने कहा। “इसने अपनी जगह चुन ली है।”

जूलिता ने उन्हें लेबल और अपना हरा मार्कर दिया, क्योंकि हमें अब पता था कि कौन-सी स्याही नहीं मिटती। फ़्लोरा ने वहीं, आठवें बीज की रोशनी में, दस्तख़त किए और मार्कर लौटा दिया।





विदा लेते समय, अपने दरवाज़े पर, फ़्लोरा ने मुझे अपनी छलनी दे दी:
“इसे रख लो। अगले तूफ़ान के लिए। और मारा से कहना कि यह तो कब का हो जाना चाहिए था।”

वेरा ने चूरा को उसके घोंसले में छोड़ा और हमें अपनी वैन में दुकान तक ले गईं, पीछे टोन्यो की साइकिल रखकर, हाईवे वाले पुल से: रात को बड़ा पुल जहाज़ों के लिए उठा दिया जाता है। उन्होंने हमें दुकान के दरवाज़े पर छोड़ा और अपने ड्रैगनों के पास लौट गईं।

दुकान में अँधेरा था। मारा काउंटर पर नहीं थीं।

वे नीचे थीं।



“क्या अब बीत गया?” मारा ने पूछा।
“काफ़ी देर पहले,” जूलिता ने कहा।

कंबल, कान ढकने वाले ईयरमफ़, और हेलमेट की जगह एक पतीला। तेईस डिलीवरी, एक भी तूफ़ान में नहीं।

अब मुझे “यहाँ कुछ काम हैं” का मतलब समझ आया। मैंने उन्हें फ़्लोरा का संदेश दिया। मारा ने पतीला भौंहों तक खींच लिया।

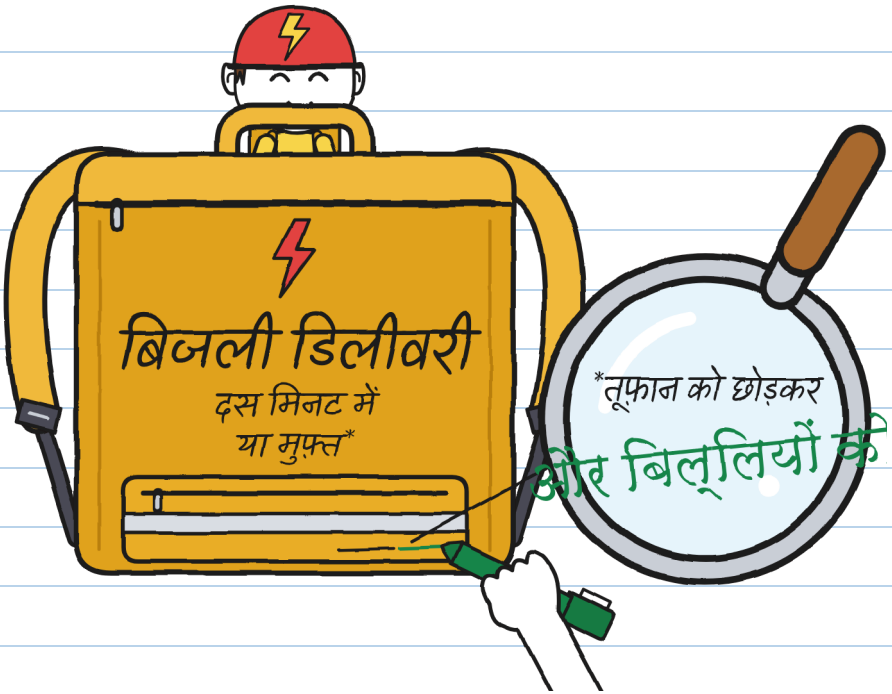
“मुझे भी गरज से डर लगता है,” मैंने उनसे कहा। मारा ने बिना कुछ कहे कंबल उठा दिया।



मैं उनके साथ काउंटर के नीचे घुस गया। हम दोनों के लिए जगह थी।

मारा ने टोन्यो के लिए डिलीवरी का एक डिब्बा उलटा करके स्टूलों के पास रख दिया।
"तुम्हारी जगह। फ़िलहाल," उन्होंने कहा।

टोन्यो बैठ गया और जूलिता के मार्कर से अपने बैग पर छपे छोटे अक्षरों में कुछ और जोड़ दिया: "और बिल्लियों को"।



अब छोटे अक्षर सच बोल रहे हैं। –ज.

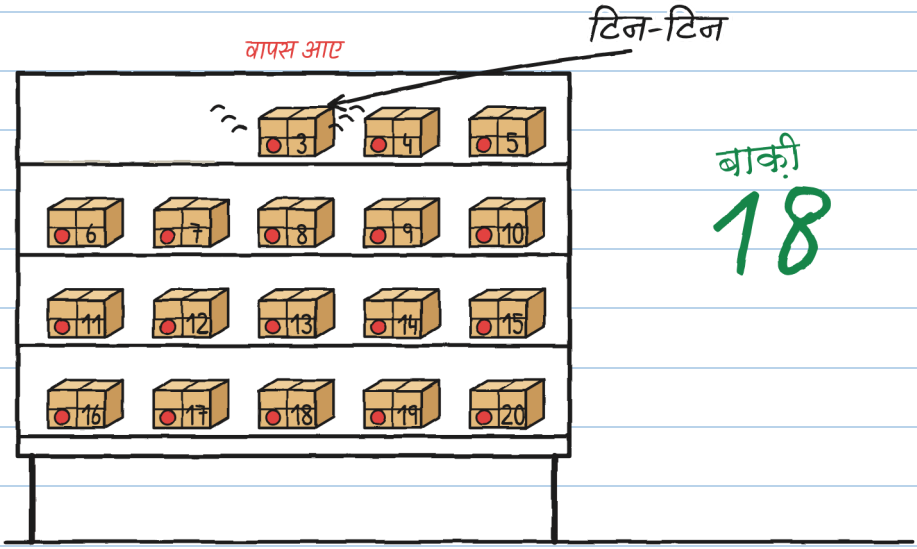
मैंने अपना प्लान ठीक कर लिया। गरज के लिए:

1. *हाथी गिनना।*
2. *किसी के साथ।*
3. *हिच आ जाए, तो कुछ नहीं होता।*

बाक़ी



और यह मत कहना कि तुम किसी चीज़ के शिकारी हो। –ज.

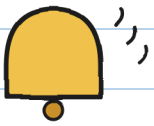


उस रात, घर जाने से पहले, वापस आए पार्सलों में से एक बज उठा: टिन-टिन। किसी घंटी की तरह। नं. 3।

लेबल पर लिखा था:

नं. 3

टोन्यू के लिए

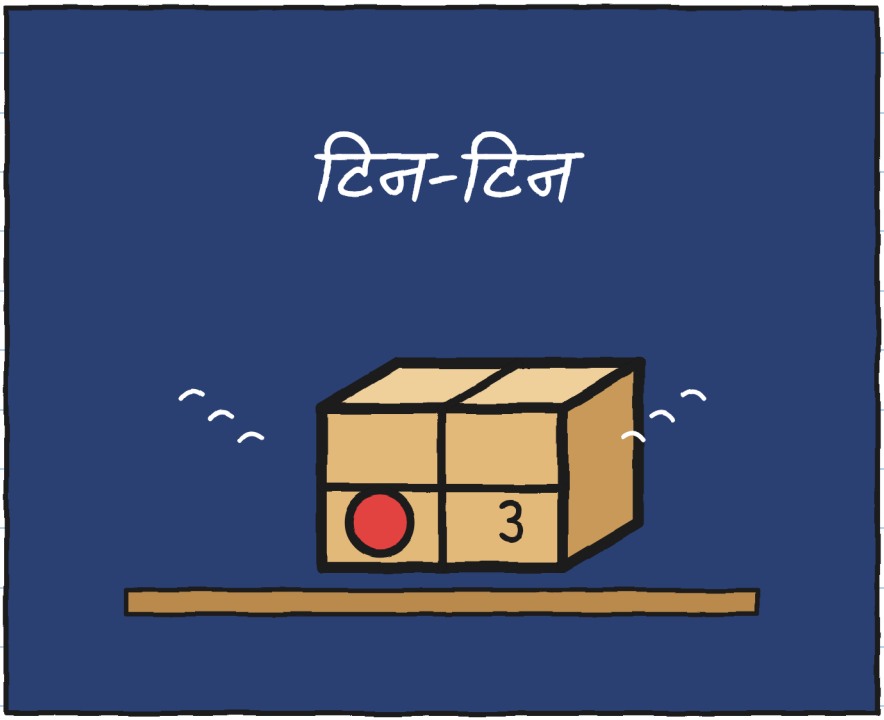


टोन्यो अपने हेलमेट के रंग जैसा लाल हो गया।



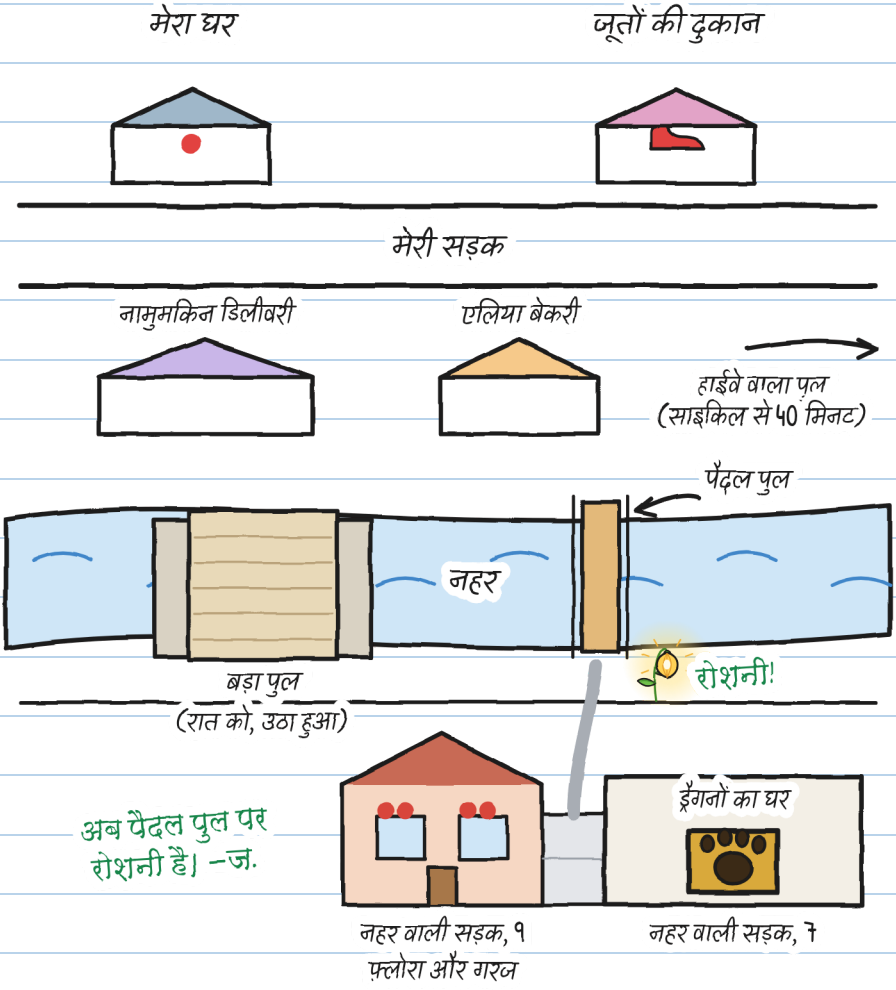
नामुमकिन डिलीवरी · 3

(बहुत जल्द)



टोन्यो को पार्सल कौन भेज रहा है? –ज.

मोहल्ला (वर्शन 2)


मेरा घर
जूतों की दुकान
मेरी सड़क
नामुमकिन डिलीवरी
एलिया बेकरी
हाईवे वाला पुल
(साइकिल से 40 मिनट)
पैदल पुल
नहर
रोशनी!
बड़ा पुल
(रात को, उठा हुआ)
अब पैदल पुल पर रोशनी है। –ज.
इंगनों का घर
नहर वाली सड़क, १
फ़्लोरा और गरल
नहर वाली सड़क, ३

R. के बारे में मेरे पास एक कार्ड है। पहले दो सुराग डायरी नंबर 1 के हैं। नए मैंने लिख लिए:

R. के बारे में हम क्या जानते हैं



R.

1. बहुत ख़राब लिखावट (मारा)।
2. R. का पहला अक्षर पढ़कर वेरा का रंग उड़ गया।
3. बहुत पहले फ़्लोरा के साथ कंदील लगाना।
4. देर से सही, वादा पूरा होता है।
5. फ़्लोरा के जादुई शीशे बनाना।
6. कोई उसका नाम नहीं लेता। यह भी एक सुराग है। –ज.

और तुम? तुम्हें क्या लगता है R. कौन है?

मुझे लगता है R. है...

एक कहानी, छह साइज़

इसके छह साइज़ हैं, 3 से 16 साल तक, और 20 से ज़्यादा भाषाएँ। XXS, XS, S, M और L में वही पन्ने और वही चित्र हैं। XL एक उपन्यास है। बदलता बस इतना है कि कहानी कैसे सुनाई जाती है।

साइज़ XXS · PRE-A1
लूलिता सातवाँ बीज पकड़ लेती है।

साइज़ XS · A1
फ़र्श पर एक बीज बचा था। लूलिता ने उसे पकड़ लिया। सात।

साइज़ S · A2
फिर बिजली चमकी: फ़र्श पर सिर्फ़ एक बीज बचा था। लूलिता ने उसे पकड़ लिया। सात।

साइज़ M · B1
अगली चमक में सिर्फ़ एक बीज बचा था, और लूलिता ने उसे पकड़ लिया। सात।

साइज़ L · B2
जब बिजली फिर चमकी, तो फ़र्श पर सिर्फ़ एक बीज बचा था, और लूलिता ने उसे पकड़ लिया। सात।

साइज़ XL · B2–C1
सचित्र उपन्यास · 13+
CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं।

हर कोई अपने साइज़ में। तूफ़ान वही। —ज.

परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com पर करो

असली तूफ़ान: क्या करना चाहिए

1. अगर तुम्हें गरज सुनाई दे, चाहे दूर ही क्यों न हो, तो घर के अंदर आ जाओ: बिजली तुम तक पहुँच सकती है।
2. अंदर रहो, किसी बड़े के साथ, खिड़कियों, दरवाज़ों और काँच से दूर। ग्रीनहाउस, पुल, पेड़ या पानी के पास बिल्कुल नहीं।
3. आख़िरी गरज के आधा घंटा बाद तक बाहर मत निकलो।
4. हाथी गिनने से पता चलता है कि बिजली पास गिरी या दूर, और मन शांत होता है। इससे यह पता नहीं चलता कि बाहर कब निकलना है।

अपना तूफ़ान गिनो

घर के अंदर से: बिजली की चमक और गरज के बीच हाथी गिनो।

चमक	हाथी	किलोमीटर (लगभग हर 3 हाथी पर 1)	वह बिजली: क्या और पास या और दूर?
1	15	5	—
2	१	3	और पास